

★ पात्रपरिचय ★

पुरुष

१. सूत्रधार ... नाट्यनिर्देशक ।
२. श्रीकृष्ण ... परमेश्वर, अवतारी पुरुष, राजा, नायक ।
३. नारद ... देवर्षि ।
४. धर्मदास ... द्वारपाल ।
५. धनञ्जय ... अर्जुन ।



स्त्री

१. नटी ... सूत्रधारक सहायिका ।
२. हस्तिमणी ... श्रीकृष्णक पटरानी ।
३. सत्यभामा ... श्रीकृष्णक छोटी रानी, मानिनी ।
४. सुभद्रा ... श्रीकृष्णक बहिनि, अर्जुनक स्त्री ।
५. मित्रसेना ... हस्तिमणीक सखी ।
६. सुमुखी ... सत्यभामाक सखी ।



श्रीः

उमापत्तुपाध्याय-विरचितं

पारिजातहरण-नाटकम्

मञ्जुलीतम्-१

जय जय मधु-कैटभ-अदिनि^१ । जय जय महिषासुर-मदिनि ॥
धूमर-नयन भसम-मण्डिनि । चण्डमुण्ड दुहु शिर खण्डिनि ॥
रक्तबिजासुर - संहारिणि । शुम्भ-निशुम्भ-हृदय-दारिणि ॥
सभ सुर शक्ति रूपधारिणि । सेवक सबहुक उपकारिणि ॥
अनुपम रूप सिंहवाहिनि । सबहि समय रहिहु दाहिनि ॥
सुमति उमापति आशिष वानि^२ । सकल सभा जय करधु भवानि ॥

(नाट्यो-दशकः^३)

क्षोणी यस्य रवे मृणालशकलं मूलार्णवः पल्लवः
स्वर्गं ज्ञा वसनं विशाति, गगनं कस्तूरिका-लेपनम् ।

जय जगदम्ब ॥

मञ्जुलीतम्-२

अदिनि = भारनिहारि । मदिनि = नष्ट कर्णहारि । धूमर-नयन =
धूमक समान रंगक वा लाल ओ कारीक मिश्रणक रंगक (धूम) आँखि ।
मण्डिनि = अलंकृत । दारिणि = विदीर्ण कर्णहारि । दाहिनि = अनु-
कूल । सुमति = सुमति = सुमन्त्री (उत्तम मन्त्री), सुबुद्धि ।

१ - 'क' 'ग' से सम चरणक दीर्घा-त पाठ । 'ख'क अनुरोवे^२ दीर्घा-त वा ह्रस्वा-
न्तपाठो उचित । परन्तु अन्तिमवर्ण से पूर्वक स्वरक गुह उच्चारण अपेक्षित-
अदीनि, मदीनि, मण्डीनि । २ - 'क' 'ख' 'ग' वानि, भवानि । ३ - 'ख' नाट्योपाठः ।

चन्द्रश्चाह-ललाटचन्दनमुद्ध्रेणी गता मात्यतां
तेन श्रीधरणीचरेण हरिणा हिन्दूपतिः पात्यताम् ॥१॥

अपि च,

मस्यास्त्वं पूर्णचन्द्रः स्ववचनममृतं, दिग्जयश्रीश्च लक्ष्मी-
र्वास्तम्भः पारिजातोः भूकुटिकुटिलता संगरे कालकूटः ।
तीव्रं वैजोऽग्निरीर्षः पदभजनपरा राजराज्यस्तदित्यः
पारावाहो गुणानाममुल-रसमयः पातु हिन्दूपति र्वः ॥२॥

(नान्द्यन्ते सूत्रधारः)

सूत्र० - अलमतिविस्तरेण । (नटी प्रति) आर्ये ! इहागम्यताम् ।

साम्नी (नाटकक आरम्भिक मञ्जुल पद्य)

अनिक वाँत पर पृथ्वी कमल-नालक खण्डरूप मे, (पृथ्वीक) आधारभूत
समुद्र वभच्चा (छोटकौ पोखरि)-रूप मे, स्पर्शक गङ्गा (मन्दाकिनी)कपड़ा रूप
मे शोभित, आकाश कस्तूरीक लेपलप मे, चन्द्रमा कपारक मुन्दर चानतक रूप
मे ओ ताराक पंक्ति मालारूप मे छिह्-से पृथ्वीक पारण कएनिहार श्रीविष्णु-
भगवान् (वराहावतार), हिन्दूपति हरिहरदेवक रक्षा करथि ॥१॥

आओरो-

अनिक मुँह पूर्णचन्द्र, अपन वचन अमृत, दिग्जयक शोभा लक्ष्मी,
स्तम्भ (चाम्ह)स्वरूप आँहि पारिजातक गाछ, युद्ध मे भौँहक तनब विष,
तीक्ष्ण प्रताप वज्रदानल (समुद्रक आगि), वरणक सेवा मे लागल राजाक
समूह (राजी)नदीस्वरूप छथिन्ह से ई अनुलनीय रसिक, गुणक समुद्र (पारा-
वार) हिन्दूपति हरिहरदेव अहाँ सभक रक्षा करथु । (एहि पद्यमे समुद्रक गुण-
सभक राजा मे आरोप करैत हुनका पारावाररूप मे चित्रित कएल गेल
अछि) ॥२॥

(नाम्दी-पद्यक अन्त मे सूत्रधार प्रवेश करैत छथि)

सूत्रधार-विशेष विस्तार (नाम्दी-पद्यक) कएनाइ उचित नहि । (नटीक प्रति)
आर्ये ! एम्हरे आज ।

४ - 'ज' पारावाहो गुणानाममुलपुनः पातु गो संश्लेषः ।

नटी-(प्रविश्य सूत्रधारं प्रति) आजधेहु अज्जो । [आज्ञापयत्वार्यः ।]

सूत्र०-आदिष्टोऽस्मि दधन वनच्छेद-कराल-करवालेन विच्छेद्यत वतु-
र्वेक-पक्षपाशक-प्रतापेन भगवतः श्रीविष्णो दशमावतारेण हिन्दु-
पति-श्रीहरिहरदेवेन, यथा उमापत्युपाध्याय विरचितं नवपारि-
जातमञ्जुलमभिनीय वीररमावेश क्षमयन्तु भवन्तो भूपालमण्डलस्य ।
तत् गोप्यतां मञ्जुलम् ।

नटी-अहो भाअवेअं । [अहो भाअवेअम् !]

(नाटक-रागे गीतम्-१)

सुरतर घन उपवन कर मण्डप, वेदि रचल भल हिम-अचला ।
अपनहि आनन दान वचन भल, पुनि-पुनि पाउनि भवानि भला ॥
परमेसरा परमेसरा, जय जय सभ रस पेसरा ॥ध्रुवम्॥

नटी-(प्रवेश कए) आर्ये आज्ञा देख ।

सूत्रधार - यवनरूपी वनकेँ कटवा मे भवानक तस्वारिस्वरूप, विभागयुक्त वा
कटल चारुवैदक मार्गकेँ प्रकाशित करबाक योग्य प्रतापवाला,
भगवान् विष्णुक दशम अवतारस्वरूप, हिन्दूपति श्रीहरिहरदेवक
आज्ञा भेटल अछि जे उमापति उपाध्यायक वनाओल तवीन पारि-
जात-मञ्जुल नामक नाटकक अभिनय कए केँ अहाँलोकनि राजास-
भक वीररसक आवेश (संचार) केँ शान्त करियन्ह । तेँ मञ्जुल
गर्वत जाउ ।

नटी-अहो भाअय !

नाटक-राग मे गीत-२

सुरतर = देववृक्ष (पारिजात) । घन = घन । मण्डप = मड़वा (देव-
वृक्षक मण्डप वनओलनि) । वेदि = बेदी (विवाह मे वाँसक वनाओल) । हिम
-अचला = हिमालय । आनन = मुँह सँ (अपनहि मुँह) भवानीक दान करबाक

चान-कला नयनात्तल श्यापल, मानल सुख भुजङ्गवरा ।
अमिञ्ज-सार हवि अविरल होमल, हसल सकल सुर असुर नरा ॥
गाड भिजाए भाड भड भोजन, सेज ओछाओल बाघछला ।
दीप समीप वरए फणि-मणिगण, देवि देव दुहु मेने मिलला ॥
१भावे भगति भावित भव-भगवति, देधु सदा जय अभय वरा ।
भनधि उमापति सकल-नृपतिपति-हिन्दूपति प्रतिपालथु धरा ॥

नटी—(कर्ण दत्त्वा) अज्ज ! कीरिसो सो कलअलो ? [आर्य ! कीदृशोऽयं कलकलः ?]

सूत्र—भगवान् श्रीकृष्णः सह इविमण्या देव्या रैवतोपवनमगिवर्तते, तदिह गत्वा पश्यावः । (इति निष्क्रान्तौ)
(इति प्रस्तावना)

वाक्य वज्रत छथि; लोक मे कन्यादाता वाक्य पडैत छथि, वर नहि) । पाउनि = पावनी (पवित्र कएनिहारि) । पेसरा = पेशल (निपुण) । चान-कला = चन्द्र-माक कला सँ औषिक (कपार परक तेसर) अग्नि-स्वापना कएलनि—विशह मे हुवन होइछ, काँसाक पात्र द्वारा अग्नि-स्थापना होइछ । एतए चानकला काँस्यपात्रक काज करैत छनि । सुख = सुख । भुजंगवरा = साँपकेँ । अमिञ्ज = अमृत । हवि = वृत्त (चन्द्रमा सँ अमृत लए वृत्तक काज चलओरनि) । अविरल = अनवरत । होमल = होम कएल । गाड = गंगा मे । फणि-मणि = सापक मणि । भाव भगति = भक्ति भाव । भावित = ध्यान कएल गेल । भव-भगवति = महादेव ओ पार्वती । जय अनय धरा = विजय ओ अभयदान वरदान देधु । नृपति-पति = राजाक ईश = राजाधिराज ।
नटी—(अक्रान्ति केँ) आर्य ! केहन ई हल्ला थिकैक ?

सूत्रधार—भगवान् श्रीकृष्ण इविमणी देवीक संग रैवतपर्यंतक उपवन दिश जाइत छथि । तेँ एतए जाए केँ-देखी ।
(दुहु बाहर जाइत छथि) ।
प्रस्तावना समाप्त ॥

(श्रीकृष्ण-प्रवेशकम्)

(मालव-रागे गीतम्—३)

कंस-केसि कुल मोचल, उग्रसेन देल राज ।
बदुकुल कएल निराकुल, तँओ बहुत अछ^१ काज ॥
भूमिक भार उतारव, तारव^२ दानव लोक ।
धरम धरातज थापव, हरव साधुजन-शोक ॥
गरव हरव सुरराजक, काज करव समे^३ जाति ।
भगत-भाव अवधारव, धरव परम पद आनि ॥
सकल-नरेश-मुकुटमणि, पटमहिषी - विरमान ।
हिन्दूपति रस-बिन्दक, सुमति उमापति भान ॥

(ततः प्रविशति श्रीकृष्णः, इविमणी, सखी च ।)

श्रीकृष्णः—(स्वगतम्)—

भूमीभारनिवारणाय दुरितच्छेदाय दुष्टात्मनां
वेदार्थ-व्यवहारणाय च परित्राणाय धर्मस्य च ।

श्रीकृष्णक प्रवेशक गीत मालवराग मे—३

कंस-केसि = कंस ओ केशी नामक राक्षस । मोचल = मोक्ष देल (मारल) ।
निराकुल = शांत (उपद्रव-रहित) । अवतारव = हटाएव । तारव = सवगति देव । गरव = गर्व (अहंकार) । सुरराज = इन्द्र । भगत-भाव = भक्तिभावना ।
अवधारव = विचारव । पद = उचित स्थान । पटमहिषी = पटरानी । विर-मान = विशेष अनुरक्त, तल्लीन । बिन्दक = पओनिहार ।

(ततः श्रीकृष्ण इविमणी ओ सखी प्रवेश करैत छथि)

श्रीकृष्ण—(महि मन) पृथ्वीक भार केँ हटाएवाक लेल, पवित्र व्यक्तिक भव केँ नष्टकरवाक लेल, वेदक अर्थक व्यवहारक लेल, धर्मक रक्षाक लेल, देवताब्राह्मणक विद्वेषी दुष्टसभक धमकाव शांत करवाक

दर्पस्य प्रशयाय दुष्टमनसां देव-द्विजशोहिणां
ब्रह्मादि-मदक्षयाय च मया लब्धोऽवतारो भुवि ॥३॥

(प्रकाशम्) देवि ! दृश्यतां रैवतोपवने वसन्तशोभा ।
(श्रीकृष्णो रुक्मिणी सखी च गीतं गायन्ति १५ ।)

(वसन्त-रागे गीतम्—४)

अनगन्त किशुक चारु चम्पक बकुल बकहुल फुल्लिआ ।
डुनु कतहु पाटलि पटलि नीप नेवारि माधवि मल्लिआ ॥
कर जोरि रुकुमिणि कृष्णसंग वसन्त-रंग निहारहीं ।
ऋतु रभस सिसिर समापि रसमय रसवि संग विहारहीं ॥
अति मञ्जु मञ्जुल पुञ्ज पिञ्जल चारु चूअ विराजहीं ।
निज मधुहि मातल पल्लवच्छले १२ लोहितच्छवि छाजहीं ॥
पुनु केलि-कलकल कतहु आकुल कोकिला-कुल कूजहीं ।
जनि सीनि जग जिनि १३ मदन-नृपमनि विजय राज पुराजहीं ॥

लेल ओ ब्रह्मा इन्द्र आदि देवताक मद (अहंकार) क नाश कर-
बाक लेल हन पृथ्वी पर अवतार लेल अछि ॥३॥

(सुताए के) रैवत पर्वतक उपवन मे वसन्तक शोभा के देखू ।
(श्रीकृष्ण रुक्मिणी ओ सखी गीत गवैत छवि ।)

वसन्त-राग मे गीत—४

किशुक = पलाश । चारु = सुन्दर । फुल्लिआ = फुलाएल । पाटलि-पटलि
= पीड़िरी फूलक पंक्ति । नीप = रुदम्ब । मल्लिआ = मल्लिका (चमेली) ।
रभस = बलजोरी । समापि = समाप्त कए । मञ्जु = सुन्दर । मञ्जुल पुञ्ज
= सुन्दर ढेर । पिञ्जल = पीयर । चूअ = चूत (आम) । पल्लवच्छले = तबीन
पातक छाये । लोहित = लाल । केलि-कलकल = विलास करैत गुनगुनाएव ।

११ - 'ख' 'ग' मे एहि पांतीक अभाव । १२ - पल्लवच्छवि ख ग । १३ - जिति-ख ग ।

नव मधुर मधुरस-१४ मधुगुध मधुकर नीक-निक १५ रस भावहीं ।
जनि मानिनी १६-मन-मान-भञ्जन मदन गुण गुरु गावहीं ॥
बह मलय निर्मल १७ कमल परिमल पवन उपवन सोहहीं १८ ।
ऋतुराज रैवत सकल देवत मुनिहु भानस मोहहीं ॥
यदुनाथ साथ विहार हरषित सहस-सोडह १९ नायिका ।
भन गुरु उमापति सकल नृपपति होथु मङ्गलदायिका ॥

श्रीकृष्ण—प्रिये ! विश्रम्यताम् । (इत्युपविश्य आकाशमिमुखम्) अहो २०
आश्चर्यम् ॥

(नारद-प्रवेशक वरासी १-रागे गीतम्—५)

अवतर अवनी तेज २१ अकाश । न धिक दिवाकर, न धिक हुताश २२ ॥
धोतो धवल तिलक उपवीत । ब्रह्मातेज २३ अति अधिक उदीत ॥
वैणव दण्ड वेद कर शोभ । आवधि नारद वरसन लोभ ॥

कोकिल-कुल = कोहलीक समुदाय । मधुरस-मधुगुध = मधुकर आस्वादन मे मुख ।
मधुकर = भौरा । मलय-परिमल = मलयावलक सुगन्धि । ऋतुराज = वसन्त ।
रैवत = रैवत-पर्वत पर । देवत = देवता । यदुनाथ = श्रीकृष्ण । सहस-सोडह—
सोडह हजार ।

प्रिये ! सुस्ता लिख । (वैसिके आकाश दिस) आश्चर्य ॥

(नारदक प्रवेशक गीत मालव-राग मे—५)

अवतर = उतरलाह । अवनी = पृथ्वी पर । दिवाकर = सूर्य । हुताश =
अग्नि (आकाश सँ उतरैत नारदक तेज धिक अग्नि नहि) । धवल = उज्जर ।

१४ - लुब्ध-क । १५ - मधुकर कोकिला रत ख ग । १६ - मानिनीजन ख ग ।

१७ - मलय परिमल कमल उपवन कुतुम सौरम सोहहीं-ख ग । १८ - सोहंजी - क ।

१९ - धोयत - ख ग । २० - अहो (अभाव) ख ग । २१ - मलय - ख ।

२२ - तेजल अकाश - ख ग । २३ - हुताश - ख ग । २४ - तह - क ।

परम युगत तिति जगतक हीत । ब्रह्माक^{२५} सुत, मोर शम्भुक भीत ॥
सुमति उमापति भन परमान । जगमाता देह^{२६} हिन्दूपति जान ॥

(ततो^{२७} रङ्गभूमिस्थले प्रविशति नारदः ।)

नारदः—(सहस्रम्^{२८})—

न शम्भुना वा न निरञ्जिना वा,
न योगिना यन्मनसापि दृष्टम् ।
तदस्य गोविन्दपरदारविन्दं,
त्रिलोकप्रियायामि दृशा कृतार्थः ॥४॥

(२६ आसावरी-रागे गीतम्—६)

जाएब हरिक समाजे । पाओब^{२९} नयन-मुख आजे ॥

३१ की आरे ॥ ध्रुवम् ॥

योगहु न जानिअ जन्ही । दिठि भरि देखब तन्ही^{३२} ॥
ब्रह्मा शिव सेव जाही । काहि भजब तेजि ताही ॥
भनहि भगति लेब मांगी । समय परभ-पद लागी ॥

उपवीत = जनेउ । उदीत = उदित (प्रकटित) । वंशव = वीणाक । युगत = युक्त
(उपयुक्त) । तिति जगतक = तीन लोकक ।

(तखन मंचपर नारद प्रवेश करैत छथि)

नारद—(प्रसन्नता पूर्वक) जकरा ने महादेव ने ब्रह्मा आ ने योगी मनहुँ सँ
देखने छथि ताहि श्रीकृष्णक चरण-कमल केँ आइ आँखि सँ कृतार्थ
भए देखब ॥४॥

(आसावरी-राग मे गीत—६)

समाजे = सभा । दिठि = दृष्टि (आँखि) । विरमाने = विशेष अनुरक्त ।
पुनमत = पुण्यवान् ।

२५ - ब्रह्मासुत ख ग । २६ - वैश्वी - ख । २७ - रङ्गभूमिस्थले (१. भाव) ख ग ।
२८ - मानसे कृष्ण दृष्टा सहस्र - क । २९ - नारदस्वयामनम् आसावरी रागे - क ।
३० - पाएब—ख । ३१ - (अभाव) ख । ३२ - तनी—ख ।

हिन्दूपति जिउ जानै । माहेसरि देइ विरमाने ॥
सुमति उमापति भाने । पुनमत^{३३} भज भगवाने ॥

(परिकल्प्य) अहो^{३४} ! इयं सत्यभामायाः सखी सुमुली ।

सुमुली—(प्रविश्य) अनुपमिदं हि देहं मन्त्रभाषणं, जहा एषक्ते मं अज्जउत्तो
सुमरेदि, ततो^{३५} ममिस्सं । [अनुपमं वितारिमं देव्या सत्यभाषया,
यथा एकांते माम् आर्यपुत्रः स्मरति, ततो ममिष्यामि ।] (नारदं
प्रति) वक्ष्यामि नमामि, पृच्छामि अ, अहो ! नारदो वानरो वा भव ?
[ब्राह्मणं नमामि, पृच्छामि च, अहो ! नारदो वानरो वा भवान् ?]

नारदः—भगवान्^{३६} नारदोऽहं, त्वं पूर्णकामा भव । मां वानरं भणसि ?
तूनसेष कोपपशुनुसारी ते वचनकमः ।

सुमुली—(निरूप्य) भो^{३७} नारद ! अच्छरिअं !! दिव्यकइन्दो नारदो ।
[आश्चर्य ! दिव्यकवी(पी)न्द्रो नारदः ।]

(चमि केँ) इयेह तँ सत्यभामाक सखी सुमुली छथि ।

सुमुली—(प्रवेश कए) देवी सत्यभामा हमरा नियुक्त कएने छथि जे जखन
एकान्त मे आर्यपुत्र (पतिदेव श्रीकृष्ण) हमर स्मरण करथि तखन
नहि जाएब । (नारदक प्रति) ब्राह्मण केँ प्रणाम करैत छी आ पुछैत
छी जे अपने नारद छी कि वानर ?

नारद—भगवान् नारद छी हम। तौ मनोरथ सँ पूर्ण होअह । हमरा वानर
कहैत छह ? तखन तँ ई ब्रित्तिअएवाक लेल तोहर खोल भेलहु
अछि ।

सुमुली—अओ नारद ! आश्चर्य, अपने तँ दिव्य-कइन्द छी । (प्राकृत मे कह
शब्दक कथि ओ कपि (वानर) दू अर्थ होइत अछि । कइन्द सँ कवी-
न्द्र ओ कवीन्द्र बुझल जाए सकैछ ।)

३३ - पुनमत भज—ख ग । ३४—अहो (अभाव) ख । ३५—ततो—ख ।

३६—पूर्णकामा भव—ख । ३७—निरूप्य भो नारद (अभाव) ख ।

नारदः—दिव्यकपि भजति ? सर्वथा श्लेषकुशलाभिः । कथय, कुत्र श्रीकृष्णः ?
सुमुखी—सन्निहितो ज्ञेयः । [सन्निहित एव ।]

दौवारिको धर्मदासः—(प्रविश्य ३८) आज्ञापयति श्रीकृष्णः, पश्य सत्यभामायाः
पत्न्यात्मिति ।

नारदः—दौवारिक ! श्रीकृष्णाय नारदं मां निवेदय ।

दौवारिकः—(श्रीकृष्णनिकटं गत्वा) देव ! द्वारि नारदस्तिष्ठति ।

श्रीकृष्णः—सत्वरमानोयताम् ।

दौवारिकः—महर्षे ! उपसर्पतां देवः ३९, (इति निष्क्रान्तः ।) (नारद उप-
सर्पति । श्रीकृष्णः प्रणम्य देवा सह सम्पूज्य उपवेशयति ।)

नारदः—वंशवद्विरसु ।

श्रीकृष्णः—आमोदो विशेषेण जायते । किञ्चिदुपहृत्स्वयमातीतमस्ति ?

नारदः—दिव्यकपि (सुन्दर धानर) कहैत छह ? सभ तरहेँ श्लेषयुक्त (एक
पदक अनेक अर्थ लेवा में) वाक्य ब्रजवा में पढ़ छह । कहह कतए
श्रीकृष्ण छथि ?

सुमुखी—लगहि मे छथि ।

दौवारिक—श्रीकृष्णक आज्ञा अछि जे सत्यभामाक बाट देखह ।

नारद—दौवारिक (द्वारपाल) ! श्रीकृष्णक लग निवेदन करह जे हम
नारद आएल छी ।

दौवारिक (श्रीकृष्णक लग जाए) देव ! द्वार पर नारद छथि ।

श्रीकृष्ण—सटपट लाबह ।

दौवारिक—महर्षि ! देवक समीप गेल जाओ (बाहर गेल) ।

(नारद समीप अबैत छथि श्रीकृष्ण अपन देखीक संग प्रणाम ओ
पूजा कए नैसवैत छथिन्ह ।)

नारद—वंश बजुओ ।

श्रीकृष्ण—महर्षि ! तीनू लोक में विचरण करैत अपने कोनो आश्चर्य (अद्-
भुत बात वा वस्तु) कतए देखल अछि ?

३८ - प्रविश्य (अभाव) ख ।

३९ - उपसर्पतां देवम् - क ख ।

श्रीकृष्णः—महर्षे ! त्रिलोकसञ्चारिणा भयता किमाश्चर्यं कुत्र दृष्टम् ?

नारदः—भवचरितादप्यत् किमाश्चर्यम् ?

श्रीकृष्णः—आमोदो विशेषेण जायते । किञ्चिदुपहृत्स्वयमातीतमस्ति ?

नारदः—श्रीस्ते वक्षसि किं देव, वाणी चास्मे स्तुतिः कृतः ।

सिधव्रह्मादिसेव्यस्य, सेवका के तवेतरे ॥५॥

(आसावरी-रामे गीतम्—७)

तोहें हरि अन्तरयामी । गुप्त करह किए स्वामी ॥

४० कि हरि हरि ॥ ध्रुवमत

सुरपति देल अमूले । पारिजात एक फूले ॥

तुथ पद पूजय पाऊ । तेँ दरसन मने ४१ आऊ ॥

भगति दीअ ४२ जओँ पानी । से लेहे अमिअ सम जानी ॥

दीनबन्धु तोहें देवा । करय पार के सेवा ॥

सुमति उमापति भाने । पुनमत भज ४३ भगवाने ॥

हिन्दूपति जिउ जाने । माहेसरि देइ विमाने ॥

नारद—अपनेक चरित सँ आन कोन आश्चर्य अछि ?

श्रीकृष्ण—सुगन्धि विशेष रूपेँ लागि रहल अछि ! किछु उपहार (सनेस)
अनने छी की ?

नारद—लक्ष्मी अहाँक हृदये में छथि तेँ भी दिअ, अहाँक मुँह में सरस्वती
छथि तेँ स्तुति की कल, जिव ब्रह्म आदि अपनेक सेवक छथि तेँ
आन के अपनेक सेवक भए सकैत अछि ? ॥५॥

(आसावरी-राम मे गीत—७)

अन्तरयामी—दोसराक मनक बात बुझनिहार । गुप्त = गुप्त । सुरपति
= इन्द्र । अमूले = अमूल्य । अमिअ = अमृत । विरमाने = विशेष अनुरक्त ।

४० - (अभाव) ख । ४१ - सम-ख ग ।

४२ - जे-ख ग । ४३ - पुनमति भज-ख ग ।

(इति पुष्पं वदति । श्रीकृष्णो गृहीत्वा सादरं पश्यति । सर्वे साक्षर्यं पश्यन्ति ।)

(सत्यभामा प्रवेशको मालव-रागे गीतम्—८)

सत्यभामा देवि देल परवेश । स्वामि सोहाग सोहाउनि वेश ॥
हरषित हृदय गरुष अभिमान । कृष्णविआरी प्राणसमान ॥
देखइत चानकलाक सँदेह । वसुधा अमु जनि विजुरी रेह ॥
भणिमय भूषण अङ्ग अमूल । कनक-लता जनि फूलल फूल ॥
सुमति उमापति कवि परमान । पटमहिषी देवि हिन्दूपति जान ॥

(ततः प्रविशति सत्यभामा, सुमुखी च ।)

सत्यभामा—सहि सुमुहि ! सच्चं सुमरद अज्जउत्तो ? [सखि सुमुखि ! सत्यं स्मरत्पार्थिवः ?]

सुमुखी—असच्चं देइए अभादो कहइस्सं ? [असत्यं देव्या अग्रे कथयिष्यामि ?]

सत्यभामा— (पञ्चम-रागे गीतम्—९)

सखिहे^{४४} रभसि रस चलु फुलवाडी ।
तहाँ मिलत मोर मदन मुरारी ॥

(ई कहि फूल देत छथिन्ह । श्रीकृष्ण फूल लए के सादर देखैत छथि ।
सभ आश्चर्य सँ देखैत छथि ।)

(सत्यभामाके प्रवेशक गीत मालवराग मे—८)

गरुष = गुरु (पेव) । वसुधा = पृथ्वी पर । विजुरी = विद्युत्क रेखा ।
अमूल = अमूल्य । कनक-लता = सोनक लती मे । सुमति = सुमन्वी ।

(तखन सत्यभामा ओ सुमुखी प्रवेश करैत छथि)

सत्यभामा—सखि सुमुखि ! की सत्ते आर्थपुत्र (पतिदेव) स्मरण करैत छथि ?

सुमुखी—देवीक आगू असत्य कहब ?

^{४४} - रभसि चलु-क ख ।

कनक - मुकुट^{४५} -माणिक भल भासा ।

मेरु - शिखर जनि दिनमणि - वासा ॥

सुन्दर नयन बदन सानन्दा ।

उगल युगल - कुवलय लय चन्दा ॥

पोत - वसन तन भूषण^{४६} मणी ।

जनि नवघन डर^{४७} धन - दामिनी ॥

वनमाला उर उपर उडारा ।

अञ्जन - गिरि जनि मुरसरि - धारा ॥

जीवन - धन - मन सरवस देवा ।

से लय करब हरिचरणक सेवा ॥

सुमति उमापति भन परमाने ।

जगमाला देवि हिन्दूपति जाने ॥

सहि सुमुहि ! उज्जअज्जाणे अञ्चरिअ आमोदो । मए वि माहवी-
लदान्दरेण पेक्खमिह, अह्मा किं करेवि परोक्खे अज्जउत्तो । [सखि सुमुखि !
अथ उद्याने आश्चर्यम् आमोदः । मयापि माधवी-लतान्तरेण प्रेक्ष्यते, यथा
किं करोति परोक्षे आसंपुत्रः ।] (इति तथा करोति ।)

सत्यभामा— (पञ्चम-राग मे गीत) —९

रभसि = उत्कण्ठित भए । मदन-मुरारी = श्रीकृष्ण (कामदेव सन सुन्दर
मुरारि) । मेरु-शिखर = सुमेरु पर्वतक चोटी पर । दिनमणि = सूर्य । युगल =
जोड़ा । कुवलय = कुमुदिनी । दामिनी = विजलोका । डर = छाती । वनमाला =
गरा सँ ठेहुन धरिक माला । उडारा = उदार (प्रशस्त) । अञ्जन-गिरि =
करिश्मा पर्वत । मुरसरि = गङ्गा । सरवस = सर्वस्व ।

सखि सुमुखि ! आइ फुलवाडी मे अद्भुत सुगन्धि अछि । हमहूँ
माधवी-लताक डोंग सँ देखैत छी जे परोक्ष मे श्रीकृष्ण की करैत छथि ।

(ई कहि तहिना करैत छथि ।)

^{४५} - मुकुट मणि भल-क ख ।

^{४६} - भूषण मणि-क ख । ^{४७} - नवघन जग दामिनी-क ख ।

श्रीकृष्ण—नारद ! किमस्य पुष्पस्य माहात्म्यम् ?

नारद—रूपं गन्धं रसं स्पर्शं तरो यो यं यमिच्छति ।

याचितं तं तदा तस्य सर्वं पुष्पं प्रयच्छति ॥१॥

सत्यभामा - अचचारिअं क्व पारिजातस्य पुष्पं ! का अण्णा जेट्ठदेहं परितेजिअ पाइस्सदि ? [आश्चर्यं खलु पारिजातस्य पुष्पम् ! का अम्या ज्येष्ठदेवीं परित्यज्य प्राप्स्यति ?]

श्रीकृष्णः - (रविमणीं प्रति) देवि ! गृह्यतामिदम् ।

रविमणी - (प्रणम्य गृहीत्वा) महन्तो क्व एतो वसादो पतोः । [महान् स्वप्न प्रसादः पश्युः ।]

सत्यभामा - जुतं एवं जेट्ठकुमारमावाण । [युक्तमिदं ज्येष्ठकुमारमातुः ।]

सुमुखी - कथं जुतं ? परं देई परोवखे चिट्ठिअ । [कथं युक्तम्, परं देवी परोक्षे स्थिता ।]

रविमणी - सहि मित्तसेना ! सम्भावेहि महस्सवम् । [सखि मित्रसेने ! सम्भावय महोद्योत्सवम् ।]

मित्रसेना - सहि ! सक्कधा कय्व्वं, जह देई णच्चइस्सदि । [सखि ! सर्वथा कर्तव्यं, यदि देवी तत्तिष्यति ।]

श्रीकृष्ण—नारद ! एहि फूलक की माहात्म्य छेक ?

नारद—जे व्यक्ति रूप, रस, गन्ध स्पर्श ओ जाहि जाहि पदार्थक इच्छा करैत अछि, मडला पर ओहि व्यक्ति के ई फूल सभ किछु दैत अछि ॥१॥

सत्यभामा—आश्चर्य थिक ई पारिजातक फूल !! जेठ रानी के छोड़िआन के एकरा प्राप्त कए सकैत अछि ?

श्रीकृष्ण - (रविमणीक प्रति) देवि ! ई लिअ ।

रविमणी - (प्रणम कए, लट्ठ के) ई पतिदेवक महान् प्रसाद थिक ।

सत्यभामा - जेट्ठ कुमारक माइक लेल ई जचिते भेल ।

सुमुखी—कोना युक्त भेल ? पान्तु देवी (सत्यभामा) परोक्ष मे छी ।

रविमणी - सखि मित्रसेना ! महान् उरसव (वा वसन्तोत्सव) मनाउ ।

मित्रसेना—सखि ! सभ तरहें मनाएव, (यदि देवी रविमणी) तानी ।

रविमणी - जहा आणवेदि पियसही । [यथा आजापयति प्रियसखी ।] (इति तथा करोति ।)

(राजविजय-राने गीतम् - १०)

आज^{४५} जन्म-फल भेला । सख-परिहरि^{४६}, हरि मोहि फुल देला ॥

पुजल पुरब हमे^{४७} गौरी । आसा तनि परिपूरलि^{४८} मोरी ॥

उपर रहल मोर माथे । सोइह सहस वरनारिक साथे ॥

सुमति उमापति भाने । ^{४९}माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

सत्यभामा - सहि सुमुहि ! अदो वर कि पेखिअव्वं, कि सुणिअव्वं ? तदो णिअ-ट्टस्स । आवासं जेव्व गच्छम्ह । [सखि सुमुखि ! अतः परं कि प्रेषितव्यं, कि श्रोतव्यम् ? ततो निवर्त्तन्व । आवासमेव गच्छन्वः ।]

सुमुखी - एवं ण जुत्तं देअं अविट्ठअ । [इदं न युक्तं देवमदृष्ट्वा ।]

श्रीकृष्णः - (एकान्ते^{४५} मनसि) कथं विनेया प्रिया सत्यभामा ?

सत्यभामा - अज्जवि पिया-सइो तुणीअदि जेव । [अद्यापि प्रियासख्यः श्रूयत एव ।] (उपसृत्य सगद्गदम्) जअदि [जयति] (इत्यर्थो वाक्स्तम्भः । नारदं प्रणमति ।)

रविमणी - प्रियसखीक जे आजा । (ई कहि सहिमा करैत छथि) ।

राजविजय-राग मे गीत—१०

परिहरि = छोड़ि के । परिपूरल = परिपूर्ण कएलति ।

सत्यभामा - सखि सुमुखि ! एहि से आभू की ब्रह्मब्र, की सुनव ? ते खुड़ । परहि बल ।

सुमुखी—देव (श्रीकृष्ण) क बिनु दर्शनहि जाएव ठीक नहि हीएत ।

श्रीकृष्ण—(एकान्त मनमे प्रिया सत्यभामा के) कोना मनाएव ?

^{४५} - आज जन्म मोर सुकलित भेला - ग । ^{४६} - परितेजि.ख ग ।

^{४७} - हम.ख.ग । ^{४८} - परिपूरल.ख.ग । ^{४९} - पुनमति भजु नयमाने-ख ग ।

^{५०} - (अभावे) ख.ग ।

नारदः - स्वामिबहुमान्यतां गमिष्यसि ।

सत्यभामा - अज्जबि सा आसा ? (अद्यापि सा आशा ?)

श्रीकृष्णः - प्रिये ! इदमासनमास्थताम् ।

सत्यभामा - (सगद्गदाक्षरम्) अज्जउत्त ! दाणि ज्जेव सीरोवेअणा उप्पणा,
तदो आवासं ज्जेव गच्छमिह । [आर्यपुत्र ! इदानीमेव शिरो-
वेदना उत्पन्नाः तत् आवासमेव गच्छामि ।] (इति सख्या सह
निष्क्रान्ता ।)

रुक्मिणी - अज्जउत्त ! उण^{२४} भोजनं कदुअ महस्सिणा पुणीअदु ।
[आर्यपुत्र ! पुन भोजनं कृत्वा वक्ष्यामि महर्षिणा पुण्याम् ।]

श्रीकृष्णः - एवमस्तु ।

(सतो नारदेन सख्या च समं देवी निष्क्रान्ता)

श्रीकृष्णः - (स्वगतम्)^{२५}प्रत्यक्ष-विपक्षं मानसं कृत्वा सत्यभामा मां सस्ताप-
यति । तथाहि-

सत्यभामा—एकनहुँ प्रियासद्वत् सुनैत छी ? (लग जाए के गद्गद कण्ठ सँ)
जय हो (आधे कहैत, बोल लड़खड़ाए रुक जाइत छनि । नारद
के श्रवण करैत छनि ।)

नारद—स्वामीक द्वारा बहुत मानल जाएय ।

सत्यभामा—आबहुँ से आशा ?

श्रीकृष्ण - प्रिये ! एहि आसन पर बैसु ।

सत्यभामा—(गद्गद कण्ठ सँ बजैत) आर्यपुत्र ! एकनहि मांथ मे दर्द ऊठि गेल
अछि, तेँ घरहि जाइत छी । (ई कहि सखीक संग बाहर भए जाइत
छथि ।)

रुक्मिणी—आर्यपुत्र ! महर्षि भोजन कैए केँ एहि घर केँ पवित्र करय ।

श्रीकृष्ण—एहिना हो ।

(तखन नारद ओ सखीक संग रुक्मिणी बहार जाइत छथि ।)

मालिन्येन मलीमसीकृतमुरः कम्पेन चोत्कम्पितं

मोहेन द्रवितं विलोचनजलैः श्वासैः पुनः शोषितम् ।

नि क्षिप्तं च सगद्गदेन वचसा काश्यप-वाराह्विधौ

विश्लेषेण पुन मंदीय^{२६}हृदयं न्यस्तं हुताशे तथा ॥७॥

अन्वेषयामि तावदुपवन-लतासु । (परिक्रम्य) नूनं परित्यज्यैव गता
प्रिया । तदावासमेव गच्छामि । (पुनः परिक्रम्य) इदं प्रियावासद्वारम्, इयं
शिखिरोपचारव्यथा सुमुखी । पृच्छामि तावदेनाम् । (प्रकाशम्) सुमुखि !
प्रियायाः का वार्ता ?

सुमुखी - (प्रविश्य)^{२७}देव ! सेव्यं पुंस्त्वं अन्तासं वासगती, सम्पदं ऊना देव्येण
किदा । [देव ! सेव्यं पुंस्त्वं अन्तासं वासगती, सम्पत्प्रतम् ऊना देवेन
कृता ।]

श्रीकृष्ण—(मनहि मन) प्रत्यक्ष विरह मन कए केँ सत्यभामा हमरा दुखी
बनाए रहल छथि । जेना कि—

हमरा हृदय केँ ओ मालिन्य (मनकेँ विकृत करबा) सँ मलिन
कए देलनि अछि, छातीक कम्पन सँ कौरा देलनि अछि, मोह सँ
बहुरामल मोर सँ द्रवित कए देलनि अछि, श्वास सँ सुखा देलनि
अछि, गद्गद बाणी सँ कहना-सामर मे फेकि देलनि अछि, ओ
पुनः अपन विषोग सँ सँ आगि मे राखि देलनि अछि ॥७॥

तावत् फुलवाड़ीक लतीक भोज मे तर्केत छियनि । (धूमिकेँ)
निश्चते छोड़ि केँ प्रिया चलि गेलीहि ! सँ हुनक डयोड़िअहि पर
जाइत छी । (फेरि धूमिकेँ) ई प्रियाक आवासक दोआरि बिक
आ ई ठंडइ उपचारक लेल व्याकुल सुमुखी थिकीहि । तावत् हिन^{२८}
कहि पुछैत छियनि । सुमुखि ! प्रियाक की समाचार ?

सुमुखी—(प्रवेश कए) उवेह । पहिने अनायासे बसन्तोत्सव प्राप्त छल, जाव
भाग्यदोषे^{२९} कम भए गेल ।

श्रीकृष्णः - प्रियायाः परिजनसंघाति वाणी यन्मैव । विशेषेण कथय ।

सुमुखी - (नाट राने १० गीतम् - ११)

कि कहव माधव । तनिक विशेषे । अपमहु तनु धनि पाव कलेसे ॥
अपनुक आनन आसि हेरी । आनक भरमे काप कत बेरी ॥
भरमहु निभ कर उर पर आनी । परसे तरसे सरसीरुह जानी ॥
चिकुर निकर निअ नयन निहारी । जलधरजाल जानि हिय हारी ॥
अवन बचम पिकरव अनुमाने । हरि हरि तेहु परि तेजय पराने ॥
साधव ! आवहु करिअ समधाने । सुपुष्य निठुर न रह्य निधाने ॥
सुसति उमापति भन परमाने । माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

ता निवेदेनि देइ देवागमन । [तन्निवेदनाभि देवै देवागमनम् ।]

श्रीकृष्णः - (सवायम्) सुमुखि ! तवा विशेषं यथाज्ञापयति मां देवी ।
(सुमुखी निष्क्रान्ता)

श्रीकृष्ण - प्रियाक सैवक-वर्गोंक बोल टेछे अछि । विशेषरूपे कह्य ।

सुमुखी - (नाट - राने मे गीत) - ११

विशेसे = विशेष हालत । तनु = देह सँ । आरसि = अपना मे ।
आनक भरम = चन्द्रमाक भूष । निअ कर = अपन हाथ । उर =
छाती । परसे तरसे = स्पर्श सँ उड़ाइत । सरसीरुह = कमल ।
चिकुर-निकर = केश समूह । पिकरव = कोइलीक स्वर । समधान
= समाधान ।

सँ देवक (कृष्णक) आगमन देखी के निवेदित करै छी ।

श्रीकृष्ण - (बराइत) सुमुखि ! से काज करिह जाहि सँ देवी हमरा हृदयक
जगत जगबधि ।

(सुमुखी बहार भए जाइत छथि)

श्रीकृष्ण - तावज्जालसायें प्रवस्याभि प्रियायाः कोपावस्थाम् । (तथा कृत्वा)
हा धिक् प्रमादः !! (श्लोकः) -

वद्ध्वा शुक्लपटेन भालमखिलं हित्वा हठाद् भूषणं
प्रव्यासः परिशोष्य शोणमधरं ग्लानं च शाश्वत्स्वरम् १० ।
सन्तापं शिशिरोपचारनिवहैरावेदयन्ती तनोः
कोपान्मामभिषिञ्चतीव हृदयं व्यस्तं कदुष्णाश्रुभिः ॥ ११ ॥

(इतः प्रविशति यथोक्तरूपा सत्यभामा, तामववीजयन्ती सुमुखी च ।)

सुमुखी - देव ! समस्तसिंहि । [देवि ! समाश्रयसिंहि ।]

सत्यभामा - कि उष उबआरेहि । [कि पुनरुपचारैः ?]

(१० सुमुखी सम्बोध्य श्रीकृष्णं प्रति उल्लहन् - गीतं गायति ।)

(कोलाव - राने गीतम् - १२)

हरि ११ सओ प्रेम आस कय लाओल, पाओल परिभव ठामे ।

जलधर छाहरि तर हमे सुनसिहु, आतप भेल परिनामे ॥

श्रीकृष्ण - तावत् सिङ्गी सँ प्रियाक समसायल अवस्थाके देखैत छी (तहिना
कए) हाथ रे हमर छापराही !

ओ (हमर प्रिया) जलधर कपड़ा सँ सम्पूर्ण कपार के बाहि के,
गहना के हठपूर्वक त्यागि के, स्वास सँ लाल लाल डोर के सुखाव
के मुखरल स्वर के बढाओने छथि (साश्वत्) । उँहाक उपचार
सभ सँ शरीरक सन्ताप के सूचित करैत कोव सँ हृदय-स्थित हमरा
गर्म गर्म नौर सँ जेना तहबैत होथि ॥ ११ ॥

(तखन पूर्वोक्त रूपमे सत्यभामा ओ हुनका हाँकेत, सुमुखी प्रवेश
करैत छथि ।)

सुमुखी - देवि ! येर धछ ।

सत्यभामा - उपचार सभ सँ की ? (सुमुखीकेँ सम्बोधित कए श्रीकृष्णक प्रति
उल्लहन्गीत गवैत छथि ।)

सखि हे । सन्त जन्तु करिअ मलाने ।

अपन करम फल हूँ उपभोगन, तोहें किअ^{६२} तेजह पराने ॥ भ्रूवम् ॥

पुस्य-पिरिति रिति हुनि जज्जो विसरल,^{६३} तथिहु न हुनकर दोसे ।

कतेक जतन धरि जज्जो परिपालिअ, साप न मानय पोसे ॥

कवहु नेह पुनु नहि पागासय, केवल फल अपमाने ।

वेरि सहस्र दस अमिअो^{६४} भिजाविअ, कोमल न होअ पवाने ॥

गुरु उमापति भन,^{६५} पहु देव दरसन, मान होएत समधाने ६७ ।

सकल-नृपतिपति हिन्दूपति जिउ, महाराजि^{६८} विरमाने ॥

अलं शाव श्रीविश्व-दुखलाभाशेण । [अलं तावज्जीवित-दुर्वलाया-
सेन ।]

(सत्यभामा ६६ कृष्णमधिकृत्य पुनः सुमुखीं प्रति उपहासगीतं गायति ।)

(विभास-रागे गीतम्- १९)

७० सहस्र-पूर्ण-शशि, रहओ गगन बसि, देखओ^{७१} दशओ दिस दन्दा ।

भरि बरिसओ विस, वहओ दशओ विस, मलय समीरन मन्दा ॥

कोलाव-राग मे गीत—१२

परिभव = अपमान । जलधर = मेढक । आक्षप = रोका । परितापे = परि-
णाम (फल) । मलाने = मलान (दुखी) । रिति = रीति । अमिअ = अमृत ।
पवाने = पापाण (पापर) । परसन = प्रसन्न । अवसान = समाप्त । हिन्दूपति
जिउ = हिन्दूपतिजी । विरमाने = विशेष अनुरक्त ।

प्राणक हेतु ई दुर्वल प्रयास व्यर्थ धिक ।

(सत्यभामा कृष्णक विषयमे सुमुखीक प्रति उपहासगीत गवैत छथि ।)

विभास-राग मे गीत—१३

पूर्णशशि = पूर्णमासक चन्द्रमा । गगन = आकाश । दन्दा = दन्त (खीचा-
मानी) । विस = विष । मलय-समीरन = मलयपर्वतक बसात । हिन = हीन ।

६२ = निअ हा ग । ६४ = विसरय तएओ न हुनकर हा । ६५ = वेरि
सहस्र दस अमिअ हा ग । ६६ = गुरुउमापति हरि होएत परसन- हा ।

६७ = अवसाने हा । ६८ = माहेश्वरि वेड क । ६९ = (वक्तिक अभाव)- हा ।

७० = सहस्र पुनिमा शशि- क । ७१ = निअ-बासर देखो- क ।

साजनि ! आव जीवन कोन काजे ।

पहु मोहि दिन कर, अपयश जग भर, सहस्र न पाबिअ लाजे ॥

॥ भ्रूवम् ॥

कोकिल अलिकुल, ७२ कलरखे आकुल, करओ दहओ दुहु काने ।

७३ सिरिस-सुरभि जत, देह दहओ तत, हनओ मदन^{७४} सतवाने ॥

७५ कवि उमापति भन, हरि होएत परसन, मान होएत समधाने ।

सकल-नृपतिपति हिन्दूपति जिउ, पटमहिषी विरमाने ॥

(इति मूर्च्छति ।)

श्रीकृष्ण— हा धिक् ॥ ईदृशी दशा ? सन्देहे^{७६} पासिता गया । तदुपसर्पान्ये-
नाम् । (इत्युपसर्पति । सखी संजया निवार्य विज्ञापयित्वा चरणतलं
परामृशति ।)

सत्यभामा— (ससंजम्) सहि सुमुहि । अण्णारिसो ज्जेव अज्ज दे करस्पस्सो ।

॥ सखि सुमुखि । अम्पादृश एव अद्य ते करस्पसोः । ॥ (नयने
उन्मील्य श्रीकृष्णं दृष्ट्वा अवगुण्ड्य उपविशति ।)

अलिकुल = भौराक समूह । सतवाने = सेवो बाण । सिरिस-सुरभि = शिरीषक
फूलक सुगन्धि । मदन = कामदेव । हनओ = मारओ ।

(ई कहि मूर्च्छित होइत छथि) ।

श्रीकृष्ण— हाय ! एहन दशा मे जियाके सपस्वित कए बेल हम ! तखन हिनक
समीप जाइत छी । (ई कहि लग जाइत छथि । सखी के दशारा
सं रोकि के निवेदन कए पाएर जैत छथि ।)

सत्यभामा— (होश मे आवि) सखि सुमुखि । आइ तोहर रूप ओ आने तरहक
लगैत अछि । (आँखि खोलि श्रीकृष्णके देखि शोष तानि
बैसैत छथि) ।

७२ = करय वैशाकुल- हा ग । ७३ = सिरिस- क हा ग ।

७४ = सहओ- हा । ७५ = सुकवि उमापति हरि- क हा ग । ७६ = सन्देहे
(अभाव)- हा ।

श्रीकृष्णः - (बद्धाञ्जलिः) प्रिये ! प्रसीद मानिनि !

(मालव - रागे^{११}मानिनीगीतम् - १४)

ओ मे मानिनि ॥ध्रुवम्॥

अरुणपुरुष दिशा^{१२}, बहलि सगरि निशा^{१३}, गगन^{१४}मगन भेल चन्दा ।

२२ मुँदि गेलि कुमुदिनि, तदअओ तोहर धनि, मुँदल मुख अरविन्दा ॥१॥

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

रश्मि नीलति कीमुदी, शशिनि कीमुदी होवते

वदन्ति कलमन्ततः शृणु समन्ततः कुवकुटाः ।

पुरो दिगतिरोहिता परि तिरोहितास्तास्काः

कथं तव वरोह ! हे ! मुखसरोरहे मुद्रणम् ॥१॥

ओ मे मानिनि !

कमल वदन, कुवलय दुई लोचन, अधर मधुरि निरमाने ।

सगर सरीर कुसुम तुअ सिरिजल, किए तुअ हृदय पषाने ॥२॥

श्रीकृष्ण - (कल जोरि) प्रिये ! प्रसन्न होउ मानिनि !

मालव-राग मे गीत - १४

अरुण = सूर्य । बहलि = बहि गेल (बीतलि) । सगरि निशि = सम्पूर्ण रात्रि । गगन = आकाश मे । कुमुदिनि = चन्द्रक शरत भेलापर कुमुदिनी स-
कुचछ ओ सूर्यक उमला पर कमल फुलाइछ । अरविन्दा = कमल ॥१॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक) -

कुमुदक (पानि मे फुलाइबला एक उज्जर फूलक) कांति क्षीण होइत अछि, चन्द्रमा मे प्रकाश कम भए रहल अछि, आखिर सबतिर सुर्गि वज्रत अछि से सुन, पूब दिग अशक्त लाल भए गेल, तारा सभ छुप्त भेल, तथापि हे वरोह (सुन्दर जौघवाली) अहाँक मुँदरूपी वसल मुनएले किएक अछि ?

७३ - मानिनी (अभाव) - हा ग, ७८ - (अभाव) - क हा । ७९ - दिशि - हा ग । ८० - निशि - हा ग । ८१ - गगन गच्छि - हा । ८२ - मुनि - हा ग ।

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

आस्यं ते सरसीरुहेण रचितं, नीलोत्पलाभ्यां दृशी,

वन्धूकेन रदच्छदी, तिलतरोः पुष्पेण नासापुटम् ।

इत्येवं विधिना विधाय कुसुमैः सर्वं वपुः कोमलं

कूर्चं यानसंगम्यता पुनरिदं कस्मादकस्मात् कृतम् ॥१०॥

ओ मे मानिनि !

असकति कर कङ्कण नहि परिहसि, हृदय हार भेल भारे ।

गिरिसम गरुअ मान नहि मुञ्चसि, अपरुह तुअ बेवहारि ॥३॥

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

कान्ते किं तव कञ्चुकं न कुचयो नो हस्तयोः कङ्कणं

दीर्घतरो वलयावलीमपि न दीर्घस्थेन विन्यस्यसे ।

हारं भारमिवापधारयति चेदेवं कुचं मेघवद्

मानं मानिनि ! किं न मुञ्चसि गनाक् तं भावमावेदय ॥११॥

ओ मे मानिनि !

अवगुन परिहरि हरषि हेर धनि, मानक अवधि बिहाने ।

हिमगिरि कूमरि चरण हृदय धरि, सुमति उभापति भाने ॥४॥

कमल वदन = कमल सँ मुँदक निरमाने = निर्माण भेल अछि । कुवलय = कुमुदिनी सँ । मधुरि = मधुरी कल सँ । पषाने = पाषाण = पाथर ॥२॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक) -

अहाँक मुँह (आस्य) कमल सँ बनल अछि, नील कमल सँ दूनु आँखि, मधुरीक फूल सँ (वन्धूकेन) दुनु डोर, तिलक फूल सँ नाक बनल अछि - एहि तरहें फूलहि सँ सम्पूर्ण देह कोमल बनाए ई निष्ठुर मन पाथर सँ एकाएक कोना बनाओल गेल ? ॥१०॥

असकति = असक्ति (आवृत्त सँ) । परिहसि = पहिरैत छी । गरुअ = भारी । मुञ्चसि = छोड़ैत छी । अपरुह = अपूर्व ॥३॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक) -

प्रिये ! क्षम्यतायकमेको ममाश्रयः । अथवा-

(केदार-रागे गीतम्—१४)

मानिनि! मानह जओँ मोर दोस^{५३} साति करह बहन करह रोस^{५४} ॥
मोहि कमल बिलोकन वान । वेधह विधुमुखि ! कय समधान ॥
पीन पयोधर गिरिवर साधि । बाहु फाँस धनि ! धर मोहि बाँधि ॥
५५ की परिनति भय परसति होहि । भूषण चरण-कमल देहे मोहि ॥
सुमति उमापतिभन परमान । जगमाता देइ हिन्दूपति जान^{५६} ॥

(ततः^{५७} सत्यभामा प्रणम्य उत्थाय श्रीकृष्णः तां प्रति विलास-गीतं गायति ।)

हे मुन्दरि ! अहाँक स्तन पर बहव किएक नहि अछि, हाथ मे कमल ओ बाँहिरपी लत्ती मे खोनाक चूड़ीक (बलव) पाँची लेहो कमजोरीक कार-
णें नहि सजसैत छी, हार (मोतीमाला) केँ भार जकाँ बुझैत छी, तँ एहि तरहेँ सुमेरु पर्वत खनक भारी मान केँ थोड़को किएक नहि छोड़ैत छी ?
हे मानिनि ! ताहि आशय केँ प्रकाशित करू ॥१५॥

अवगुन = दोषकेँ । परिहरि = छेड़िकेँ । हेन = देखू । मानक अवधि
बिहाने = मान करवाक समय भोरे तक रहैछ । हिमगिरि कुम्भरि = पर्वतगिरि

प्रिये ! हमर एकटा एहि अपराध केँ क्षमा करू । अथवा—

केदार-राग मे गीत—१५

शास्ति = शासन । रोस = तामस । पीन = पुष्ट । पयोधर-गिरिवर साखी
= स्तनरुखी पहाड़ मे साधिकेँ । कोप-विरत = तामस केँ शास्त कए । परसति
= प्रसन्ना । भूषण = सहनक रूप मे अपन चरण-कमल दएहू ।

(तखन सत्यभामा केँ प्रणाम कए ऊठि कृष्ण हुनका प्रति विलासगीत
गावैत छथि ।)

५३ - (पक्षि अनाध) - ख. ग. ५४ - दोस - ख । ५५ - ख. (सकल चरणक
अन्त्य गुरु) शास्ति करिअ घर न करिअ रोस । ५६ - कोप प्रलय - ख । ५७ -
साहेसरि देइ बस पुर अभिमानी - क. ५८ - सत्यभामा - (प्रणम्य उत्थाय) - (केदार
रागे - गीतसं० - १७) - ख. ग. ।

(गीतम्—१६)

५९ तोहेँ धनि! राजकुमारी, कुसुमहुँ तह सुकुमारी, बरनारी लो ॥
नयन देहे जल डारी, मोहि वर हलह निहारी, करेँ मारी लो ॥
तोहेँ मोहि हिरमनिहारी, अमिअ-भरलि जनि झारी, भय मारी लो ॥
उमानाथे रिति परचारी, तुअ बस भेलहु बिचारी, परचारी लो ।
हिन्दूपति जिउ जाने, सहारानि विरमाने, बिद्वमाने लो ॥
सत्यभामा—(श्रीकृष्ण प्रति)—

(केदार-रागे गीतम्—१७)

साहि अवसर ताहिआस । साधव! किए तोहे लेल मोर नाम ॥
आव कि करव परकार । साधव ! अपवश भरल संसार ॥
सबहु पाओल अवकास । साधव ! जग भरि भेल उपहास ॥
कोने परि सखिसभे साथ साधव ! उपर करव हम माथ ॥
जाहि देखि हसलिहुँ कालिह । साधव ! से आवे^{६०} करति करतालि ॥
६१ परम करम मोर वाम । साधव ! सकल^{६२} तकर परिताम ॥
सुमति उमापति भान । साधव ! सुपहु करव समधान ।
हिन्दूपति जिउ जान । साधव ! साहेसरि देइ विरमान ॥

(इति सूच्छति ।)

गीत—१६

कुसुमहुँ तह = फूलहूँ तह अधिक । अमिअ = अमृत ।
सत्यभामा—(श्रीकृष्णक प्रति)।

केदार-राग मे गीत—१७

साहि अवसर = गीतसं० १०क बाद । परकार = उपाय । अवकाश = अव-
सर (उपहास करवाक) । करतालि = थपड़ी (हुँगी उड़ाओत) । वाम = विपरीत
६० - (अनाध) - ख. ग. ६१ - आवे = देति - ख ।
६२ - परम - ख । ६३ - सकल तनिक - ख ।

श्रीकृष्णः—(उत्थाप्य) प्रिये ! समीक्ष्यसिहि, समाख्यसिहि ।
सत्यभामा—(आश्चर्य) अज्जजत ! आसासो बि मे^{१२} लज्जाअरो । [वार्य-
पुन ! आस्थासोअपि मे लज्जाकरः ।]

श्रीकृष्णः—प्रिये ! प्रसीद । स्फुटमाज्जाव । कथं ते मानः^{१४} समाधातव्यः ?

भुवनं समये दयादृग्गतः

त्वयि, मुक्तो मयि ते दयादृग्गतः ।

भवती न विना परास्तभावाः

कुपितायां त्वयि मे परास्तभावः ॥१२॥

(श्री^{१३}कृष्णः सत्यभामां प्रति गीतं गायति—)

(गीतम्—१८)

६१केशरि तिलक कमल निरमान । चाँद कुमुद लय पूजल काम ॥

धने धने !! तुअ अनुरूप सिनेह^{१५}, सुन्दरि ॥ध्रुवमा॥

समाधान = समाधान । हिन्दू पतिविड = हिन्दू पतिजी। (मुच्छिन्न होइत छथि)

श्री कृष्ण—(अठि के) प्रिये ! मोन धीर कर ।

सत्यभामा—(शान्त भए) आर्यपुन ! आस्नामानो हमरा लेल लज्जाजनक थिक।

श्री कृष्ण—प्रिये ! प्रसन्न होज । साफ साफ आज्ञा दिअ । कोना अहाँक मानक समाधान होइत ।

अहाँक रहला पर दयादृष्टिक हृदयबला हम संसार के शान्त करैत छी, अतः हमरा प्रति अहाँक दयादृष्टिक छोड़ (कृपाकटाक्ष) उचित थिक। अहाँक बिना हम परास्त नहि भए सकैछ छी (अर्थात् अहीँ रा हीँ परास्त होइत छी), किन्तु अहाँक तमसएला पर हमरा दोसराक (अन्य सायिकाक) विषय मे भाव अस्त भए जाइछ ॥१२॥

(श्रीकृष्ण सत्यभामाक प्रति गीत गवैत छथि—)

गीत—१८

केशरि = केशर जकर रंग विरोध होइछ । चाँद = चन्द्रमाके । धने =

धन्य । अलक = केश मे । नखतक = नखतक, शारिक । बेनी = गुट्टी । विरचि

६३ मल्लज्जाअरो छ । ६४ मयः । ६५ (पक्षिक अभाव) छ । ६६ (गीतक अभाव) छ । ६७ गुअ रूप मन अनुरूप सुन्दरी क ।

अलक अलक मुकुतावलि काँति । जनि जलधर तर नखतक पाँति ॥
बेनी विरचि सीस फुल देल । जनि फणिपति सिर मणि उगि गेल ॥
बेसरि मोति अलक मुखइन्दु । उमगि अभिजा-रस गर जनि बिन्दु ॥
६४पदक-हार कुच-सिर पक टारि । मुखशशि हेरि मेरु छिठि चारि ॥
छरबसि रत्नक उभापति भान । लखिमा देख पति ई रस जान ॥

सत्यभामा—(मुमुक्षुमधिकृत^{१६} कृष्ण प्रति)—

(मल्लार-रामे गीतम्—१९)

माधव ! करहु हमर समधाने । देहे^{१७} मोहि पारिजात तह दाने ॥
एहिखन तोरित करहु परधाने^{१८} । नहि तजो^{१९} हमर अवस अवधाने ॥
एहि पर हमर पुरत अभिमाने । हमर तह सहि नहि होअ अपमाने ॥
भुमति उभापति भन परधाने । पदमहिषी देख हिन्दूपति जाने ॥

श्रीकृष्णः—(दीवारिक प्रति^{२०}) धर्मदास दीवारिक ! देवीगृहान्तरधमनय ।

(नेपथ्ये—यथाशा राजान् ।)

= बनाए । फणिपति = शर्पराजक । बेसरि = नाकक भूषण मे मोती । अलकैत लगीत अछि जे भुवल्ली चन्द्रमा जेना छछलि के अमृतक बिन्दु चूअरैत हो । सत्यभामा—(मुमुखी के कहैत कृष्णक प्रति)—

मल्लार-रामे गीत - १९

समाधाने = समाधान । तोरित = तुरतपरखाने = प्रस्थान । अवस = अध-
मय । अवसान = अन्त (मृत्यु) । हम तह = हमरोहीं वा हेम तह = धर्म समान ।

श्रीकृष्ण - धर्मदास दीवारिक ! देवीक (रक्षिमणीक) घर हीं नारद के एतए जगए खावहु ।

(नेपथ्य मे राजाक जे आज्ञा ।)

६८ (पक्षिक अभाव) य । ६९ (पक्षिक अभाव) य ।

१ (पक्षिक अभाव) य । २ देह । ३ त्वरित करहु दाने । ४

५ तह य । ६ हेमत हमहि य । ७ दीवारिकप्रति (अभाव) य ।

नारदः—(प्रविश्य) अनुजानीहि मां पुरन्दरपुरगमनाय ।

श्रीकृष्णः—एवं भवता महेष्वा पुरन्दरो वाच्यः—

(श्लोकवद्धः* नारदहस्तेन श्रीकृष्णः पुरन्दरं प्रति आत्मवाक् प्रेषयति ।)

पुरन्दर ! प्रेषय पारिजातं पश्यन्तु वध्वस्तवः सभिलाषाः ।

पुलोमकन्याकुचकुङ्कुमाक्तं^१ भित्तु मां शाङ्गं शरस्तत्रोरः ॥१३॥

(नारदं प्रति) शोचं प्रत्यागम्यताम्^२ ।

नारदः—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

श्रीकृष्णः—धर्मदास ! प्राप्तर्त्तवा धनञ्जयं ब्रूहि, सञ्जीभवतु भवानमराधिव,

समरस्य । अभ्यदपि, सुभद्रा प्रियाश्वासनाय प्रेषणीया ।

(निपथ्ये—यथा देवाणां ।)

नारद - (प्रवेश करे) इन्द्रक तगर जएवाक हमरा आज्ञा देल जाए ।

श्रीकृष्ण - अपने हमर समद इन्द्रके एहिरूपे कहबे म्हु-

(श्लोकवद्ध अपन उक्ति नारदक हृथि^३ इन्द्रक प्रति पठबैत छथि) ..

हे इन्द्र ! पारिजात पठाउ । साहि लेल उरकण्ठित अहाँक भावहु लोकनि (श्रीकृष्णक स्त्रीनभ) देखथ । पुलोमाक कन्या (शङ्गी = इन्द्रक पत्नी) क स्तनक कुंजुम सँ लिप्त अहाँक छातीकेँ शाङ्गक (श्रीकृष्णक घनुषक) तीर जनु वेधए (अर्थात् जँ पारिजात नहि पठाएव तँ छाती बेधल जाएन से जानब) ॥१३॥

(नारदक प्रति) नद दए आएव ।

नारद—बेस । (बहार भए गेलाह) ।

श्रीकृष्ण—धर्मदास ! भोरै जाए केँ अजुन केँ बहिहनु-अहाँ इन्द्र सँ युद्धक

हेतु तैयार होइ । दोसरो बात, जे सुभद्रा केँ प्रियाक (सत्यभामाक)

आश्वासनक हेतु पठा दथि ।

(निपथ्यमे—जे सरकारक आज्ञा ।)

३ (परिचित अनाक) ख १ द माञ्जित - क ख ग ।

६ (अनाक) ख १

(सतः प्रविशति सुभद्रा)

सुभद्रा^१—(सत्यभामां प्रति) सहि सत्त्वभामे ! समास्ससिहि, समास्ससिहि
अवणइरसदि दे मण्णुं अज्जो । [सखि सत्यभामे ! समाश्वासिहि,
समाश्वासिहि । अपनेष्मति ते मन्थुम् आर्यः ।]

श्रीकृष्ण—कथं चिरायते नारदः ?

नारदः—(प्रविश्य कृष्णं प्रति)

यत्र मोहवरात् कुण्ण ! ब्रह्मा शम्भुश्च मुह्यतः ११ ।

लोकेश-श्रीमद्वाराधस्य तत्र शकस्य का कथा ॥४॥

परगनुवहीतव्यः श्रीकृष्णेन^२ सदापतोक्षेत् ।

श्रीकृष्णः^३—नारद ! कथय, कथय ।

नारदः—(उपसृत्य) श्रीकृष्ण ! इदं प्रत्युत्तरितं पुरन्दरेण—

पारिजातदलं यावच्छूचिकाग्रेण विद्धयते १४ ।

तावत् कुण्ण ! विना युद्धं मया तुभ्यं न दीयते ॥१५॥

(तखन सुभद्रा प्रवेश करैत छथि)

सुभद्रा - (सत्यभामाक प्रति) सखि सत्यभामा ! स्थिर रहू, अहाँक कोपकेँ
आर्य दूर करतह ।

श्रीकृष्ण - नारद देरी किएक कए रहल छथि ?

नारद—(प्रवेश करे) जाहि श्रीकृष्णक लग ब्रह्मा ओ महादेव सेहो मोह सँ
अप्रकृतिरव भए जाइत छथि तए तीनु लोकक आधिपत्यक लक्ष्मीक
मद सँ आद्य भेल इन्द्रक तँ कसे कोन ? ॥१४॥

मुदा, मद हटाए केँ श्रीकृष्णक प्रति अनुग्रह करव उचित छलन्हि ।

(लग जाए) श्रीकृष्ण ! इन्द्र ई उतर देलन्हि अछिः पारिजातक पातकेँ
जतवा सुइयाक रोक सँ धेदि सकैत छी ततयो अंश हे कृष्ण ! विनु युद्धे हम
अहाँकेँ नहि दए सकैत छी ॥१५॥

१० (सुभद्राक उक्ति अनाक) ख ११ मुह्यते - क ख ग ।

१२ श्रीकृष्णो ख ११ (अनाक) ख १ १४ निधते क १

श्रीकृष्णः—तहि अनुभवतु फल नारद ! धैर्यवत्य । अयमहमिदानीं सन्तप्तं
विहङ्गमराजम् ह्वयामि । दक्ष धनञ्जय ! पारिजातस्य^{१६} ह्वयामि,
इन्द्रमदं चापवारयामि । प्रिये ! अनुजानीहि ।

सत्यभामा—किद्विच्छी मिथद्वृत्तः, सिग्धं आनन्द-पञ्चसिंहरो मेसिदम्बो ।
[कृतकृत्यो निवर्त्तस्व । लीलासाम्प्रतमृत्तिहरः प्रीतिव्ययः ।]

श्रीकृष्णः—अयं नारदो निवेद्यविषयगतस्य कार्यसिद्धिम् ।

नारदः—उत्कण्ठते मे लोचनं आर्तपुत्र-सन्नामदर्शनाय ।

(श्रीकृष्णो धनञ्जय-नारदाभ्यां सन् पारिजातहरणाय निष्क्रान्तः ।)

सत्यभामा—सहि सुहृद् ! अवि पाप किद्वकओ अज्जलसो पत्ति भङ्गिनिवट्ठि-
स्सदि^{१७} ? [सखि सुभद्रे ! अपि ताम कृतकार्यं आर्यपुत्रो भट्टिनि
प्रतिनिवर्त्तिष्यति ?]

सुभद्रा—अध हं ? [अथ किम् ?]

सत्यभामा— (मालव-रागे गीतम्—२०)

प्रथमहि ओ रे,

कुसुम-रचित एक तलपट्टु, की अलपट्टु ।

विरह-वेआकुल छल पट्टु ॥

श्रीकृष्ण - त्वत्त नारद ! विमुख होएवाक फल भोगधु । इयेह हम एखन सगलें
पक्षिराज (गुरु) के वअवैत छियहि । दक्ष (बुद्ध ने पट्टु) अर्जुन !
पारिजातक नाछके हरण करैत छी । आ इन्द्रक मंद के दूर करैत
छी । प्रिये ! आज्ञा दिअ ।

सत्यभामा—कर्त्तव्य पूर्ण कए धूइ । अज्जो आनन्दमय समाचार देगिहार के
पठाउ ।

श्रीकृष्ण— इयेह नारद आवि के कार्यसिद्धि सचामार सुनओताह ।

नारद— हमर आखि भातिजलोकनिक पुढ देखवा लए उत्कण्ठित अछि ।

(श्रीकृष्ण अर्जुन ओ नारदक संग पारिजात-हरणक हेतु प्रस्थान
कएल) ।

सत्यभामा— सखि सुभद्रे ! की आर्यपुत्र कार्यसिद्धि कए जटए बुझताह ?

सुभद्रा— त आजोअ की ?

१६—पङ्क्तिअद्विस्ववि—क हा ।

तन्हि^{१६} विनु ओ रे,

नयन बरिस^{१७} जलधर सन, की परसन ।

कतिखन देत विहि बरसन ॥

उपवन ओ रे,

पिक पञ्चम कर जनु सर, की अनुसर ।

मार मदन धरि^{१८} धनु-सर ॥

सुनु, धनि ओ रे,

सुमति उगापति भन मत, की धन मत ।

सुपट्टु मिलत रस जनमत ॥

सहि सुहृद् ! वामं गणनं मे परित्स्फुरति । [सखि सुभद्रे !
वामं नयनं मे परित्स्फुरति ।]

सुभद्रा सहि ! पेश, नारदो संपत्ति । [सखि ! प्रेक्षस्व, नारदः संपाद्यः ।]
नारदः—(प्रवेश) देवि ! दिष्ट्या वर्षसे, जितं श्रीकृष्णेन, ह्यतश्च^{१९} पश्चात्
पारिजातस्यः ।

सत्यभामा— (मालव-रागे गीत)—२०

तलपट्टु = तल्प (ओछाओन) पर । अलपट्टु = अल्पट्टु (थोड़वो) । पट्टु =
प्रभु (पति) । परसन = प्रसन्न । विहि = विजाता । रिक्त = कोइली । सर =
स्वर । मार मदन = कामदेव मारैत छवि । (मार) पद मे इलेख अछि जकर
(१) मारख ओ (२) कामदेव अर्थ होइछ । मदन शब्दक संग प्रयुक्त भेला सँ
पुनस्तवदाभास धलंकार भेल ॥

सखि सुभद्रे ! हमर वामा आखि फडकैत अछि । (ई सुभक लक्षण
शिक) ।

सुभद्रा— सखि ! देखू, नारद आवि गेलह ।

नारद— (प्रवेश कए) देवि ! भाग्यक जोड़गरि छी । श्रीकृष्ण जितलाह,
पाछ पारिजातक नाछ हरण कए लेलन्हि ।

१६—तनि—हा । १७—बरसि—हा । १८—धनि—हा । १९—हृतः—हा ।

सत्यभामा—इदं दाव पारिजातस औत्साहिकं नेष्टु (इति हारं ददाति ।)
भयशं ! निवेदेहि समासेन समर-जयं वृत्तान्तो । [इदं तावत् पारि-
जातस्य औत्साहिकं गृह्णाम । भयवन् । निवेदय समासेन समर-
जयवृत्तान्तम् ।]

नारदः—अहो ! निर्दयं प्रहारः परस्परं भ्रातृपुत्राणाम् ॥

(वसन्त-रागे गीतम्—२१)

आ २१० ॥

ऐरावत असवार पुरन्दर, धन-भूषण धनु हाथे ।

सहस्र तुरग चङ्घि चलल धनुर्धर, तनय जयन्तक साथे ॥

आ २११ ॥ ध्रुवम् ॥

भाइ-भाइ रण भेल भयङ्कर, गजवर गरुड़ दुरस्ता ।

अचरज देख्य देवगण २२ आयल, गिरिस २३ गोरि परजन्ता ॥

सारंग-सर सुरपति उर वैधल, गाण्डिव-पाणि जयन्ता ।

ठामहि ठोर ठोकि विन्तासुत भगिण २४ दिग्गज दन्ता ॥

पारिजात तर गरुड़ चढाओल, हरि करकमल उपाडि ।

सबकां शिव पुन कयल समञ्जस, आयल मुदित मुरारि ॥

सत्यभामा—बहिने ई पारिजातक (पातक) इनाम लिअ । (हार दैत छथिन्ह) । भयवन् ! संक्षेप मे विजयक वृत्तान्त कहू ।

नारदः—ओह ! अपन भातिज-लोकनिक निर्दय प्रहार केहन छल ॥

वसन्त-राग मे गीत-- २१

पुरन्दर=इन्द्र । धन-भूषण=मेघक गहना । तुरग=घोड़ा । तनय
जयन्तक=अपन पुत्र जयन्तक (इन्द्रक पुत्र जयन्त छलथिन्ह) । गजवर=
ऐरावत हाथी ओ गरुड़ जतिक वीरताक अन्त नहि, ताहि दुनु मे रण भेल ।
गिरिस गोरि परजन्ता=महादेव ओ गोरी पर्यन्त । सारंगसर=श्रीकृष्ण ।

२०—(अभाव) - हा ग । २१—(अभाव) - हा ग । २२ = वैद्यगुति - क । २३—

गिरि ई गिरिस - हा । २४—आयल—हा ग ।

सकल-यवन-जन वर-दावानल, दशम देव अवतारा ।

सकल-नृपति-पति हिन्दूपति जिउ २५, सब रस जयनिहारा ॥

(ततः प्रविशति सपारिजातो गरुडाह्वः श्रीकृष्णः, अस्वारुहो धनञ्जयः ।

श्रीकृष्णः—सखे ! गृह्यतामसं पारिजातस्य ।

धनञ्जयः—सखि सत्यभामे ! सम्प्रति सर्वसिं मानवतीनं मूर्धनि विराजसे ।

यतः—

अयं रोगशोकादिकं नाशयित्वाऽश्विनो दर्शनान् सर्वमर्थं ददाति ।

स ते स्नेहृतो माधवेनोपनीतो महापुण्यधूमिस्ततः पारिजातः ॥ १६ ॥

तदुत्पीयताम् ।

सत्यभामा—(प्रणम्योत्थाय)—

(राजविजय-रागे गीतम्—२२)

जय जय पारिजात तरराज । पाओल पुरुष-पुन २६ दरसन आज ॥

मुनपति=इन्द्रक छाती वैधिल । गाण्डिवपाणि=अर्जुन जयन्तक छाती
वैधल । विन्तासुत=गरुड़ । समञ्जन=सेल । सकल-जयन=सम्पूर्ण यवन
रूपी वनक हेतु जनली आगि ॥

(तवन पारिजात सहित गरुड़ पर चढ़ल श्रीकृष्ण ओ घोड़ा पर चढ़ल
अर्जुन प्रवेश करैत छथि ।)

श्रीकृष्ण—सखि ! ऐसेह लिअ पारिजातक गाल ।

धनञ्जयः—सखि सत्यभामे ! आव सँ एखन अहाँ मानवती सबक ऊपर सोझित
भए रहल छी । किएक सँ—

ई पारिजात रोग-शोक इत्यादि केँ गष्ट कए दर्शनमात्र सँ इच्छुत व्यक्ति
केँ सब वस्तु दैत अछि । ते महापुण्यक आश्रम पारिजातक गाल अहाँ केँ
स्नेहपूर्वक श्रीकृष्ण देलनि अछि ॥ १६ ॥

तेँ गीत गाज ।

सत्यभामा—(प्रणाम कए ऊठि)

राजविजय-राग मे गीत-- २२

पुन-पुन=पूर्वक (पहिलुका) पुन्य सँ । सर्वक भूषण=सर्वक शोभा ।

२५—पति—हा । २६ = पुन - हा ग ।

सुरगक भूषण गुणक निवास । सुरद्वक^{२०} तोहँ परिपुरल आस ॥
 सेवक सब तुअ दानव देवा । मानवे^{२१} जानव की तुअ सेवा ॥
 सुरपति निअ कर करधि किआरो । सची देखि सुरसरि-जल डारी ॥
 सुमति उमागति भन घरमाने । माहेशरि देखि हिन्दूगति जाने ॥

नारदः—सत्यभामे ! जानसि ? पारिजाततटे दत्तमक्षयं भवति । तदारोपय-
 तामङ्गणे ।

श्रीकृष्णः—एवमस्तु ।

(इति तथै रोचयति ।)

श्रीकृष्णः—धनञ्जय ! बहिरुगम्य राजराजं विसर्जयिच्छ ।

(ततस्तथा कृत्वा पदभ्यामेव प्रविशतः ।)

सत्यभामा - नारद ! कि दिज्जो ? [नारद ! कि देवम् ?]

नारदः - प्रियः पदार्थः ।

सत्यभामा - सो को उण अज्जउत्तावो ण्णो ? [स कः पुनरार्यपुत्रादभ्यः ?]

श्रीकृष्णः - प्रिये ! ज्ञानवति मयि, देहि मां कृष्णाम् ।

(सत्यभामा लज्जते ।)

दानव देवा = देव ओ देवता सेवक अछि । निअ-कर = अपना हाथ । सची =
 इन्द्रक पत्नी सची । सुरसरि = गङ्गाक ॥

नारदः - सत्यभामे ! जनेत छी ? पारिजातक तर मे दान देल अक्षय होइत
 छेक । तेँ आऊन मे रोपू ।

श्रीकृष्णः - एहने होअओ । (सब कोओ रोचैत छथि ।)

श्रीकृष्णः - अर्जुन ! बाहर जाए अरिआति केँ दुबैर केँ विदा कए आऊ ।

(उत्तम तहिना कए पएरहि दुनू गोटा- अर्जुन ओ श्रीकृष्ण प्रवेश
 करैत छथि ।)

सत्यभामा-नारद ! की दिअ ?

नारदः - प्रिय पदार्थः ।

सत्यभामा-ओ पदार्थ आर्यपुत्र सेँ आन कोन भए सकैछ ?

२७ - तबहुक = क । २८ - मानव = हा ।

नारदः - कथं लज्जते ?

गीर्वा मे गिरिवो दत्तः पीलोम्या च पुरन्दरः ।

तथा तटे तरोरस्य त्वया कृष्णः प्रदीयताम् ॥२७॥

सत्यभामा - (कुशादिकमादाय) अज्ज इत्यादि अकुण्डल-अज्जउत्त-चरणभक्षण-
 कामा अज्जउत्तां नारदाय देमि । दक्षिणा न देमि । [अथेत्यादि
 अकुण्डितांश्च पुनश्चरणभक्षणकामा आर्यपुत्रं नारदाय ददे । दक्षिणां
 च ददे ।]

नारदः - स्वस्ति । सुभद्रे ! त्वया किन्न दीयते धनञ्जयः ?

धनञ्जयः - एवं भवतु । प्रभावति मयि श्रीकृष्णानुजा ।

सुभद्रा - (सलज्जं संकल्प्य ददाति ।)

नारदः - स्वस्ति । सुधा मे दासी संवृत्ती ।

जम्भा - किमयिकं स्यादधीष्टम् ?

नारदः - (समर्थम्) किञ्चुरी । कि कारयामि ?

श्रीकृष्ण - प्रिये ! हमरा परअहाँ केँ अधिकार अछि । हमरा ब्राह्मणक लेल
 दान कह ।

सत्यभामा - (लजाइत छथि) ।

नारदः - किएक लजाइत छी ? हमरा गौरी देलनि महादेव सची देलनि
 इन्द्र । तहिना अहाँ एहि गच्छक तर मे कृष्ण दिअ ।

सत्यभामा - (कुश आदि लए) अथ (आइ) इत्यादि अनवरत आर्यपुत्रक
 चरण-सेवाक कामना सेँ आर्यपुत्र केँ नारदक हेतु दान करैत छी,
 दक्षिण सेहो दैत छी ।

नारदः - स्वस्ति । सुभद्रे ! अहाँ अर्जुन क्रियेक नहि दैत छी ?

धनञ्जयः - एहिना हो । श्रीकृष्णक छोट बहिन (सुभद्रा) केँ हमरा पर
 अधिकार छन्हि ।

सुभद्रा - (लजाइत संकल्प कएकेँ दैत छथिन्ह) ।

नारदः - स्वस्ति । अहाँ दुनू (श्रीकृष्ण ओ अर्जुन) हमर दास भेलहुँ ।

दुतः - एहिसेँ वेदी की नीक होएत ?

हलं विभर्तु श्रीकृष्णः कुदालं च धनञ्जयः ।

द्वयो र्वा स्कन्धमारुह्य भूमिष्वामि यथासुखम् ॥१८॥

चरणौ तावत् संयुहयतम् ।

उभौ—अनुद्रोपभावयोः ।

नारदः—(स्थगतम्) एवमेतत् । अहो ब्रह्मण्यता लीला वा परमेश्वरस्य ॥

(प्रकाशम्) केन वा विश्वम्भारस्य वृकोदरं तुजस्य च रूर्यतामुदरम् ?

यद्यपुः शिक्रेतव्यौ । (उच्यते) कोऽपि दासकृता वर्तते ?

सुभद्रा—सहि सत्त्वभागे ! जायं रुक्मिणी न किञ्चिदं दार्थं किञ्चिहि अज्यं ।

[सखि सत्त्वभागे ! यावद् रुक्मिणी न कीर्णाति तावत् श्रीनोहि आर्यम् ।]

सत्त्वभागा—(सलज्जम्) एता किणामि । किं मुलं, सुवर्णभारसदृस, मणि-
रक्षणरासी वा, पञ्चविहिओ वा, तिण्णलोआ वा ? [एता कीणे ।

किं मुलं, सुवर्णभारसहलं, मणिरत्नराशि र्वा, नवनिधयो वा, द्वयो
लोका वा ?]

नारद—(गर्वे सँ) दुनु दास ! कोस काज करवो ?

श्रीकृष्ण हर चरधु ओ अर्जुन कोदारि । अथवा दुनुक काहं पर
सहि केँ जेना मन होएत सुमक ॥१८॥

तावत् दुनु गाटए मएर दयाउ ।

दुनु—ई तँ, हमरा दुनु पर क्वा भेल ।

नारद—(चतर्हि मन) छीक । अहो परमेश्वरक ब्राह्मणक पति स्नेह वा
लीला ॥ (प्रकाश = सुनाय) अथवा के एहि विश्वम्भारक (संसारक
पेट भरखलक) ओ वृकोदरक (हुदर सन पेटबलाक) छोट भाए
अर्जुनक पेट भरए ? अच्छा, दुनु केँ बेचि ली । (जोरसँ)
कयो दास मोल लेव ?

सुभद्रा—सखि सत्त्वभागे ! यावत् रुक्मिणी नहि किनेत छथि तावत् आर्यके
(श्रीकृष्ण केँ) कीनि लिअ ।

सत्त्वभागा—(लजाइत) दयेह किनेत छी । की राम अछि ? सोनाक हजार
भार, मणि ओ रत्नक ढेर, नवो निधि आ कि तीनू लोक ?

नारदः—(कर्पौ पिधाम) शास्त पाथम् ॥

सत्त्वभागा—सत्त्व भाण, जेण पच्चओ होइ । [सत्त्व भाण, येन प्रत्ययो
भवति ।]

नारदः—धेनुं देहि ।

सत्त्वभागा—देमि । सहि सहइ । तुमपि वणज्जअ किणिहि, जायं होवई न
जाणइ । [दे । सखि सुभद्रे ! त्वमपि धनञ्जयं कीणस्व, यावद्
द्रौपदी न जानाति ।]

सुभद्रा—अहं पि धेनुं देमि । [अहमपि धेनुं ददे ।]

नारदः—उत्पुम्भी ती । सत्त्वभागे देवि ! सम्पूर्णस्ते बहुमानः ।

सत्त्वभागा—नवदो आसिओ पयादेण । [अवत आधिमा प्रसादेन ।]

नारदा—किमतः परमिच्छसि ?

(सर्वे गच्छन्ति ।)

(ललित-रागे गीतम्—१९)

जलधर समय करधु जलदाने । भरलि रहधु धरणी धनधाने ॥

धरमे प्रजा परिपालधु राजा । चारु१९ वरन करधु निजा३० काजा ॥

नारद—(दुनु कान मुनि पावक शान्ति हो (नारायण नारायण ॥))

सत्त्वभागा—सत्तो कहू, जाहि सँ विश्वास होअए ।

नारद—गाए दिअ ।

सत्त्वभागा—देत छी । सखि सुभद्रे ! अहाँ अर्जुन केँ कीनि लिअ, यावत्
द्रौपदी नहि बुझति ।

सुभद्रा—हमहँ गाए देत छी ।

नारद—दुनु केँ छोडि देलियनि । सत्त्वभागे देवि ! अहाँक बड़ पैच
मान पूरा भेल ।

सत्त्वभागा—अपनेक आशीर्वादक प्रसाद सँ ।

नारद—एकर बाद आज की चाहैत छी ?

(सर्वकेशी गवैत छथि)

१९-चारि-श । ३०-निज-श ।

ब्राह्मण वेद खेद नहि आवे । साधुक सन्धि कुजत जनु पावे ॥
 पिशुन पाव जनु नृपतिक काने । गुण बुझि भूप करधु सम्माने ॥
 चिरे जीवधु हिन्दूपति देओ । गुण कीरति गावधि ३१ सब केओ ॥
 ३२ सुमति उमापति भन परमाने । माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

[भरत-शाक्यम्]

उर्वी शब्देन पुर्वी विलसतु सुखिनः सन्तु सर्वे च लोकाः
 क्षीणोपायाः समस्ताद् दिशन् बहुगुण मन्त्रपितृणा वसुनि ।
 साधूनां सन्निवासः सह पिशुनजनैरेकलोकेऽपि मा भूद्
 आशुद्रान्तं कवीनां भूमन्तु भगवती भारती भञ्जिभेदैः ॥१९॥

इहि महामहोपाध्याय-कविपरिष्ठितमुख्य-श्रोमदुमापति-विरचितं
 पारिजातहरणार्यं नाटकं समाप्तम् ॥

(छलित-राग ये- गीत- २३)

सरणी = पृथ्वी । वरमे = वरम ही । चारु वरन = ब्राह्मण, क्षत्रिय,
 वैश्य, क्षूद्र । खेद = कष्ट । सन्धि = सम्पर्क । कुजत = दुर्जन
 पिशुन = चुगिला । नृपतिक = राजा ॥

[नाट्य-निर्देशक कल्याण-कामता]

पृथ्वी धान्य से परिपूर्ण रहओ, सब लोक सुखी होअओ, राजा सबतरहे
 धनक परामर्श कएके बहुत गुणवान् के अवकाश (बढ़वाक मीका) देओ ।
 साधुधार्मिक निवास दुर्जनक संग एकलोकहु में नहि हो । कविलोकनिक
 भगवती वाणी उत्तिवैचित्र्य से सुद्र पर्यन्त भूमण करथ ॥१९॥

इति म० म० कविरिष्ठितमुख्य-सुमति श्री उमापति उपाध्यायक
 बनाओल पारिजातहरणनाटक सम्पूर्ण भेल ॥

३१-गावधि-३१ । ३२-(पंतीक अमाव)-क ३॥

परिशिष्ट - १

उमापतिक स्फुट-काव्य-संग्रह

एकन घरि उमापतिक काव्यकृति में पारिजातहरण ही अतिरिक्त किछु
 गीत ओ श्लोक विभिन्न स्रोत ही उपलब्ध होइत अछि । एहि संग्रहिक एकत्र
 संकलन हो० रामदेव सा अपन १२५० ई० में मैथिली अकादमी पटना ही प्रका-
 शित 'उमापति' नामक पोथी में कयने छथि । ताहि संग्रह में गीत सं०—१०
 ही उमापतिक नहि थिकनि, कारण, ई गीत रमापतिक 'रक्षिणी परिणय' नाट्य-
 कक छठम अंक में भेटैत अछि । स्मरणीय थिक जे रमापति अभिनव-सुमति
 छलाह । उक्त संग्रहक सकल गीत लय 'कतिपय गीतक अष्ट पाठक' उद्धार कथ
 प्रस्तुत संग्रह तैयार भेल अछि । एहि संग्रहक गीत सं०—२ एक प्राचीन पोथीसँ
 मिलाय संशोधित भेल अछि । दुहु संग्रहक गीत सं० विवरणः—

'उमापति'	प्रस्तुत सं०
१	१
२	१
३	१४
४	१
५	७
६	४
७	३
८	६
९	८
१०	४
११	१
१२	१०
१३	११
१४	१२, १३



॥ ताराक गीत दरवारी कान्हूरा ॥

शङ्करि ! शरण धएल हम तोर ।

कुकरम देखि अधिक यदि कोपित, की करताह यम भोर ॥ध्रु०॥

शिवतरु सुरतरु [तर] शिव ऊपर, हास वास अतिधोर ।

सहस्र दिवस-मणि, चान कोटि जनि, तनु दुति करत झोर ॥

सोहे खर्ग अति गर्वक पूरनि, लम्बोदरि जगदम्बे ।

मनुज नागवर सकल सुरासुर, सबकां तुहि अवलम्बे ॥

वाम हाथ माथ अति कोमल, दहिन खड्गकर कांती ।

पाँच कपाल भाल अति राजित, श्रीहन्दीवर कांती ॥

शिव-शव-आसनि ! पास योगिनि-गण, परिहन बाधरि छाला ।

रक्त रक्त लहलह कर रसना, नव यौवन मुण्डमाला ॥

फणि नेउर-केउर, फणि कङ्कण, हृदय हार फणिराजे ।

सह रसना फणि युग, फणि केउर, फणी हार, फणि छाजे ॥

चौदिस केरव, शव मुण्डावलि, चिता अग्नि तन गेहे ।

तीनि नयन मणिमय सब भूषण, नव जलधर सम देहे ॥

शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नर मुनि धरत ध्यान ।

त्रिभुवन तारिणि, नरक निवारिणि, सुमति उमापति भाने ॥

—मैथिलभक्तिप्रकाश—गीत सं०—३६, पृ०—१४

(मैथिली गीत रत्नावली पृ०—२६, ३०)

॥ छिन्नमस्ताक गीत—तोड़ी ॥

जय जय जय परचण्डि चण्डिके ! आदिशक्ति तुअ चण्डी ।

ब्रह्मा शिव हरि, सकल भुवन भरि, तुअ सिरिजल ब्रह्माण्डी ॥

अष्टदल कमल उपर रवि-मण्डल, ता पर त्रिगुण सुरेखी ।

ता पर रति-विपरित मनमथ कर, ता पर तुअ पद पेखी ॥

लहलह रसन दसन अतिचञ्चल, विकट वदन विकराला ।

पीत पयोधर ऊपर राजित, उरग-हार मुण्डमाला ॥

उत्तम-अङ्ग वह वाम-पाणि कए, दहिन कलप धरि कांती ।

निज गल उछिल लिधुर मधुरी मधु, पीबि जिविअ भल भौंती ॥

योगिनि-बुगल पास दुइ पोसल, अरुण तरुण घनइसामा ।

तीनि नयन तुअ जोति जगत भरि, सहस्र-भानु-अभिरामा ॥

भाव-भक्ति बर दिअ परमेश्वरि ! मुक्ति मुक्ति बरदाने ।

हिमगिरि-कूमरि-चरण हृदय धरि, सुमति उमापति भाने ॥

—मैथिलभक्तिप्रकाश—गीत सं०—२६, पृ० १५ ।

भ्रमरान्योक्ति

कमलिनि सङ्गे रङ्गे दिवस समाओल

कुमुदिनि निशि विसराम ।

भगर ! पुछिअ तोहि, सरप कहह गोहि

अधिक प्रीति कोन ठाम ॥

असन कुसुम रज, भगर ! सुरभि भज

दुहु विरचए एक साति ।

एक, दिन वाञ्छि निरोधि धरति तोहि

दोसरि बान्धति पुनू राति ॥

शौरभ जोभ मुगुध मधुकर मन

जाए न केठकि - पास ।

काँट वेधत अङ्ग, रस नहि परसङ्ग

पाओव परम उपहास ॥

रस बुझ ते बुल, रसिक सबहु फुल

अधिक प्रेम गुणवान ।

छवपति भूप रसिक रस-बिन्दक

सुमति उमापति भान ॥

---मैथिली गीतरत्नावली ।

४

कृष्ण-सौन्दर्य

वेरि वेरि विरनधि, विधि बिधु मण्डल
हरिमुख सरि नहि होए ।

नयन निरखि निधि, नलिन मलिन होख

नलिनी बन घस गोए ।

हरि एक जना मोर सएह जना ॥ध्रु०॥

कनक किरिट पुर, केहर नेहर

कङ्कण किङ्किणि पांती ।

इन्द्रनील मनि, बिसकरमे जानि

कसल कनक कत भांती ॥

शङ्ख सदशन महा सरोरुह

शारङ्ग पीशर वासे ।

जनि शशि सूरज, मेरु उगल कुज

इन्द्रधनु ललित अकासे ॥

मणि मुनि धरण जुहुत मुकुतावलि

मिलित ललित बनमाला ।

जनि सागर सित सागर सरसिज

हंसक पांति विशाला ॥

घन भादव घन मास किसन पछ

घन वादमि तिथि आजे ।

घन मधुरा, घन देवकि वसुदेव

बाहि जनमल यदुराजे ॥

कोटिओ काम उषाम व पावए

हो धरनए कथि जाने ।

सब परिहरि हरिचरण हृदय धरि

सुमति उमापति भाने ॥

५

शम्भु-नटा

जय शम्भु नटा, जय शम्भु नटा ।

हँसि हर हेरथि गौरि निकटा ॥ध्रु०॥

भृङ्गी मधुर मृदङ्ग बजावथि

नग्नी निपुण झालि झमटा ।

ताल तबोरा लए पुन नावथि

राङ्गहि तारव मुनि बिपटा ॥

जान-कला सँ चूडल जमिज-रस

तेहि [सङ्गी] जिउल अजिन-लपटा ।

गौरि सिंह देखि दुरहि पडाइलि

लाज कओन सहजहि लडटा ॥

अमरत भानु जटा लय शौपल

समकि छटए जनि जलद-पटा ।

गङ्गा तरङ्ग भूमि ओजल अति

नयन चमक पनि बिजुरि छटा ॥

हँसथि सखी सभ दए करताली

ताल धरथि जनि सहस्र पटा ।

सानेद भए घर दिखओ दिगम्बर !

सुमति उमापति मितति गोटा ॥

--- (मैथिली पद्य संग्रह-प्रो० रमानाथ झा)

६

विरहिणी

सखि हे ! कि कहब निज अगोशाने ।

सुपहु कहल जने, रोय कएल सवे

कर सुनल दुहु काने ॥ध्रु०॥

आएल गमन वेरि, नयन नीर भरि
 मोहि किछु कहिओ न भेला ।
 एहन करम-हिनि, हम सनि के धनि
 करराँ पस-मनि गेला ॥
 ई हम जनितहुँ, एहन निठूर पहु
 कुन कञ्चन-गिरि सावि ।
 कीचल कर धए, बाहु-लता लए
 थिह कए रखितहुँ बांधि ॥
 गिअ सुमरिअ जये, किअ न मरिअ तये
 बुझि पड़ हृदय पपाने ।
 हिमगिरि कूमरि, वरण हृदय धरि
 सुमति उमापति भाने ॥

(--प्राचीन-गीत - प्रो० रमानाथशा)

७

उचिती

देखलहुँ हर वर आज रे । रति पति केँ होअ लाज रे ॥
 पुरुष पुण्य कल आज रे । शङ्कर हमर समाज रे ॥
 करधि हमर घर पास रे । पुरधि सकल मोर आस रे ॥
 ओ निभुवन-पति राज रे । हम निरधन धन साज रे ॥
 हमर बहुत अभिरोष रे । क्षमा करधि सब दोष रे ॥
 सुमति उमापति भान रे । शिव जग के नहि जान रे ॥

(डॉ० रामदेव शा— 'उमापति' पृ०-५२)

८

प्रथम-मिलन

पहिलहि गेलि धनि प्रियतम पास ।
 हृदय अधिक होअ लाज तरासे ॥
 गये धिर रहू धनि आंगठ न डोल ।
 हेम-मुरति सन मुखहुँ न डोल ॥

करेँ दूहु धए पहु पास बैसाए ।
 तओँ पए रहू धनि बदन ससाए ॥
 मुख हेरि ताकि भभर भाषि लेल ।
 अङ्गुम सरि कए कमलमुखि लेल ॥
 सुमति उमापति दुहेँ मन अनुमति ।
 सभिनव रस बुझ हिन्दुपति नरपति ॥
 (डॉ० रामदेव शा— 'उमापति' पृ०-५५)

९

सौन्दर्य

आशु देखलि हमे ओ गे रसनी ।
 सारथ ससिमुखि गति गजगमनी ॥
 भउँह कमान नयन सर धामा ।
 दुहुँ कर धनु धए सारलि कामा ॥
 कुच जुन सिरिकल-भर नत देहा ।
 कमल कुलल जानि धिजुरी रेहा ॥
 सोमल लोम-लता तनु देहा ।
 कनक आकृति जानि [शोभ] मति-रेहा ॥
 विहँसि विहँसि मुख करए अनन्दा ।
 वनुधा बरिस सुधारस चन्दा ॥
 वेदन-मदन उमापति भाने ।
 रतिपति-पति गिनु पुरुषक दाने ॥

(डॉ० रामदेव शा— 'उमापति' पृ०-५६)

१— ई गीत विशापतिक जनित मे 'विद्यापति गीत संग्रह' हस्तलिखित ग्रन्थ संख्या-१६०८ मिथिला संस्कृत शोध संस्थान दरभंगा मे तालपत्र संख्या-५ पर बहुत पाठान्तर रूप मे अछि । ओहि मे एहि गीतक पाँती सं० ७, ८, ९, ११, १२ चिन्न अछि । भविताक पद अछि—

भने विद्यापति सुनु देव जानु ।
 गुनमति नामरि रस दय आनु ॥

१०

सनाओन

कहह सख कलावति !, देवह दिवस कत खेद ।
 मन बुझि अबुस जकी छट, अबहु करह परिलेख ॥
 बिमुख न कर मुख हिमकर, समुल अवैतेँ हमे हेरि ।
 नयना जनु बिलुड़ावह, देह मोरि दिठिहुक मेरि ॥
 कौशलेँ करह गतागत, पुनु पुनु मोरि समाज ।
 उकुतिहि गुपुत बेकत होअ, आवे कत करह वेआज ॥
 संयस कर जिव डगनग बिहुँसिहु देह बियवास ।
 गावधि सुमति उमापति, हिसगिबि कुमरि दास ॥

(कविवेखर पुष्पाञ्जलि—खण्ड १, पृ० १६२)

११

॥ प्रेम-विभोर ॥

(बनछी—रामे)

तोहेँ हमे समुचित प्रेम ।
 रतने जडित जनि हेम ॥

भावनि ! ॥ प्र० ॥

तोहेँ जनि ! जल, हमे मीन ।
 एक जीवन, तन भीन ॥
 हमे पाओस, तोहेँ नीप ।
 हमे गृह, तोहेँ मणि-दीप ॥
 हमे कैरव, तोहेँ चन्द ।
 हमे हिय, तोहेँ अनन्द ॥
 हमे अलि, तोहेँ अरविन्द ।
 अधर मधुर भकरन्द ॥
 सुमति उमापति भान ।
 हिन्दूपति रस जान ॥

(कविवेखर पुष्पाञ्जलि—खण्ड १, पृ० १६२)

१२

॥ चोरहरण ॥

इस पाँच सखि ब्रजनारी । जत छलि नेकुल वारी ॥
 सबहु कएल एक संगे । करइत कत विधि रने ॥
 बजइत मधु-रस बानी । चललि जमुन दह पानी ॥

छन्दः—घए उतारिअ चोर अभरन, घसलि जमुना घाए ओ ।

कदम डारि मुरारि बैसल, लेल चोर चोराए ओ ॥

जमुना-जल भेल केली । सखि सब बाहरि भेली ।
 परिहन अपन न पाओल । तखना कान्ह बुझाओल ॥

छन्दः—कहहि सखि सओँ कान्ह कपटी, चोर कहँ केओ पाव ओ ।

चोर तोहर अहीर लूटल, लए दहोदिस धाव ओ ॥

रोसेँ कहलि सब गोरी । 'साति करत भूप तोरी' ॥

'सुनह सुनह तोहेँ गोरी । कि करत भूपति मोरी' ॥

छन्दः—हारि सब ब्रजनारि देखल, अब न आन उपाव ओ ।

लाजेँ आकुल कएल बिनती, अबस हाथ छटाए ओ ॥

'माधव होशु सहाए । बिब मोरा देखु छोड़ाए' ॥

बसानाथ कवि गावए । कृष्णकथा परथावए ॥

(डॉ० रामदेव झा—'उमापति' पृ० ५९)

१३

बाल-चरित्र

इस पाँच सखि ब्रजनारी । दहि-दुध बेचनिहारी ॥

बालचरित्र कृष्ण केली । गबैत जमुन तिर गेली ॥

छन्दः—जाए जमुनातीर सब सखि, ठाढ़ि भेलि ब्रजनारी ।

नील पट तन, साजि भूपन, रूप जीवन आगरी ॥

घाट बैसल नव दानी । सुन्दर सारङ्गपानी ॥

धचन बोलवि हँसी हँसी । मधुर बजावधि बाँसी ॥

छन्दः—स्वाम सओ हूँसि पुछ गोआरिन, 'घाट तोहे' घटवार ओ ।
जाएब मधुपुर गोरस बेचए, करह जमुना पार ओ ॥
सेह गुनि कह स्वामसुन्दर, धए लटुरि जेल ठाड़ ओ ।
रोकि राख गोआरनी सब, दान माऊए गाढ़ ओ ॥

हाक दए हनु कामहे । 'होअह पार कए शाने ॥
'दहि-दुध किछु बर लेहे । तोरित पार कए देहे ॥

छन्दः—'नीत मधुपुर गोरस बेचिअ, कबहु लाभ न दान ओ ।
कोन तगर तोहे' वसह दानी, कहह के तुअ जान ओ' ॥
'दान दए दए जाह नित दिन, भल न तोहर गेआन ओ' ॥
'सुनह निटुर गोपाल मन दए, भल न तोहर टेब ओ ।
एहि जन बसि के न जानए पार गेल' लेब ओ' ॥
'भए गेल दुपहरि बेरी । कसम जाएब गृह फेरी ॥
गरअ पड़ल किअ आजे । कहिति कहैते होअ लाजे' ॥

छन्दः—'आज सब कुल-लाज परिहरि, जाह मधुरा बाढ ओ ।
नन्दसुत हमे प्रबल दानी, रहिअ जमुना घाट ओ ॥
सुनह नारि गोआरि ! मत दए, कहह सत्ता सलप ओ ।
गर्व कए नहि दान राखिअ, देखि बालक रूप ओ ॥
कसक करब विधसे । उधरव जत जदुर्वसे ॥
करब भक्त निज काजे । उग्रसेन देव राजे ॥

छन्दः—बघल पुतना अओ उधरल जमल-अर्जुन दाम ओ ।
हुनि अचे, बक मारि घालल, करव कंस-बिनास ओ ॥
धुंध निज जन अचल कएकहु, देल निश्चल राज ओ ।
एहि महीतल जत भगत-जन, करब सब मिलि काज ओ ॥
सकुचित भेलि सबे नारी । देखि चरित्र वनमाली ॥
'लेह आलिङ्गन दाने । अओर अघर मधुपाने ॥

छन्दः—राधिका सओ प्रीति बाढ़ल, काम्ह घर करहार ओ ।
चललि हरषित नारि मधुपुर, कए जमुना पार ओ ॥

ननुअँ से नन्दकुमार । जसोमति प्राण अधारे ॥
समानाथ कवि गावए । कृष्णकथा परथावए ॥
— (डॉ० रामदेव झा—'उमापति'- पृ० ५६ से ६१) ।

१४

नटेश्वरी

आएल नटनेसरि लेल परबेस ।
अभरत तेजि धए जोगिन भेस ॥
बघछाऊ कछिनि गाँधल प्रेमहार ।
कछनी पहिरि माता भाउरि लेल ।
नेपुर सबद मेदिनि उड़ि गेल ॥
सती भवानी गुन अनुमान ।
सुमति उमापति होउ समधान ॥

— 'उमापति'- पृ० ५१



श्लोक

- (१) यत्र ब्रह्मसमुद्भवः, कमलया यस्मिन् निवासः कृतः,
पाणी यत् परमेश्वरेण परम-प्रेम्णा समारोपितम् ।
भो भोः ! कुन्द-कदम्ब-केतकि-जपापुष्पाणि ! वः प्रार्थये
तत् पापं कुसुमं, वयञ्च कुसुमान्वेवं न कार्यं मनः ॥

— उमानाथ—पण्डितस्य ।

(विद्याकरसहस्रकम्-श्लोकसं० ६४) ।

अर्थ— हे हे कुन्द कदम्ब केतकी ओ ओड़ू ल फूल सभ ! तोहरा सभ सँ प्रार्थना
करैत छियहु जे जतय ब्रह्माक उत्पत्ति भेल, जाहि पर लक्ष्मी निवास
कयलनि, जकरा परमेश्वर विष्णु अत्यन्त प्रेम सँ हाथ मे धारण
कयलनि— स कमलौ फूले थिक आ हमरो लोकनि फूले थिकहुँ— एहन
मन नहि करह ॥

- (२) अज्ञास्तरन्ति पारं, विज्ञा विज्ञाय द्राक् निमज्जन्ति ।
कथय कलावति ! केयं तव नयन-तरङ्गिणी-रीतिः ॥

— उमानाथ—पण्डितस्य ।

(विद्याकरसहस्रकम्-श्लोकसं० ४५२) ।

अर्थ— हे कलावती ! तोहर आँखिखूबी तदीक ई कोन तरहक स्वभाव छह
जे विनु बुझनिहार लोक तँ पास भए जाइत छथि, मुदा, बुझनिहार तँ
बुझितहि भट वय डुबिए जाइत छथि ?— से कहह ॥